प्रारंभिक पंगवाड़ी व्याकरण

SAMPLE COPY

प्रारंभिक पंगवाड़ी व्याकरण

© Pangiteam.
No part of this book can be restored in retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise without prior permission of the compilers.

First edition:- October 2011

Compiled by, Binaya Sundar Nayak, Parmas.

For further suggestions, contributions and involvement in development of Pangwali language, please contact

Mahatam Mobile No. 9418431531
Hari Ram Mobile No. 9418429574
Binaya Mobile No. 9418721336
Dhanunjay Mobile No.: 9418411599, 94184111599
Parmas village, Killar Post, Pangi, Chamba district. 176323.
Mail to: pangiteam@gmail.com

Would you like to read this book in your computer? Or you want to share this book to your friends and relatives, who are out of valley? For an electronic copy (pdf downloadable file) please mail to pangiteam@gmail.com

Editors

1. Shri. G.S. Chouhan, Retired Principal, Kawas
2. Shri. Raj Kumar, Hindi Lect. Govt. Senior Secondary School, Killar
3. Shri. Mahatam, Karel.
4. Smt. Shakuntla Rana, O.T. Govt. Senior Secondary School, Bhunjal

DEDICATION

THIS BOOK IS DEDICATED TO THOSE PANGWALAS WHO DARED TO CHALLENGE ALL THE ODDS AND DIFFICULTIES OF THE VALLEY AND SUSTAINED AN UNIQUE CULTURE THROUGH MANY CENTURIES.

THIS BOOK IS ALSO A TOKEN OF APPRICIATION TO OUR PHONOLOGY AND GRAMMAR CONSULTANTS WHO WITH THEIR LOVE FOR UNWRITTEN LANGUAGES AND CONSTANT FEEDBACK INSPIRED US TO UNDERTAKE THIS TASK.

प्रस्तावना

हर एक मकान कि शुरुआत होती है एक छोटे से गढ्ढे से, जिसे हम नींव कहते हैं। उस नींव के ऊपर नजाने कितने बड़े बड़े और सुन्दर मकान खड़े किए जाते हैं। इस व्याकरण पुस्तक को बनाने कि कोशिश भी कुछ ऐसे ही है। यह एक छोटी तथा नम्र शुरुआत है, जिसके अधार पर आनेवाले दिनों में पंगवाड़ी भाषा का व्याकरण लिखा जाएगा। हमें पता है कि जितना हम इस पुस्तक में लिख पाए हैं, पंगवाड़ी उस से भी बहुत रहस्यमयी तथा गहरी है। ये तो एक छोटा सा प्रयास है, उन रहस्यों को लोकलोचन में लाने का।

जो बोली मध्य-हिमालय के गोद में पल-बढ़ के पांगी घाटी की जनता के बोलने का माध्यम बना हुआ है, वह ना कि सिर्फ हमारे देश कि राष्ट्रीय भाषा 'हिन्दी' से मिलती है, बल्कि ये भारतवर्ष कि प्राचीन भाषा 'संस्कृत' से भी संबन्ध रखती है। पांगी घाटी कि यह बोली सदियों से दुसरी भाषाओं के प्रभाव से वचि रही। तब अपने अस्तित्व के लिए इसे ना कोई फिकर थी और ना कोई परेशानी। ये अपने लोगों के बीच बखुवी बोली जाती थी। पर, आज के जमाने में, जब पांगी घाटी उन्नति तथा तरक्की के कदमों से कदम मिला के आगे बढ़ रही है, तो साथ - साथ पंगवाड़ी के लिए खतरा मंडरा रहा है। घाटी अब बाहार की दुनियां के लिए खुल रहा है तो यहां ना की सिर्फ हिन्दी का प्रभाव पाया जाने लगा है, बल्कि पंजाबी, कुल्लुवी, चम्बियाली, भदरवाही, नेपाली तथा अंग्रेजी भाषा का भी प्रभाव मिलने लगे हैं। ऐसी परिस्थिति में पंगवाड़ी भाषा एक बदलाव के पड़ाव से गुजर रही है। अत: ये जरुरी होने लगा है की दुसरी भाषाओं की तरह पंगवाड़ी भाषा की भी उन्नति हो। ऐसे ना हो कि हमारी भाषा खत्म होने तक सिर्फ आदिवासीओं की भाषा हीं रहे। यह हर पंगवाले का जुनुन होना चाहिए कि वे अपनी मातृभाषा की तरक्की के लिए कदम उठाएं। भाषा की तरक्की ना कि सिर्फ भाषा विकास कॉमिटी बनाने से होती है, बल्कि हर एक व्यक्ति को अपनी अपनी सहायता देकर होती है। चाहें आप प्रेमचन्द कि बात कहें या कबीरजी कि या गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर कि। वे सब आम आदमी थे। वे अपनी भाषा में अपनी अपनी मन की बातें लिखे , जो उनके लिए प्रतिष्ठा तथा भाषा के लिए उन्नति लाए। पंगवाले इतने भी लाचार नहीं, इतने भी अनपढ़ नहीं, इतने भी खुदगर्ज नहीं कि वे अपनी मातृभाषा के लिए कुछ ना कर पाएं!

हमे पुरा यकीन है कि हम सब अपनी घाटी तथा भाषा को लेकर बेहद फर्क मेहसूस करते हैं। यहां का पानी हो या यहां के मेले। गर्मियों के सुनहरे मौसम हो या सर्दियों की बर्फ। यहां की देशी शराब हो या सेब और ठागीं हो। हम अपना सीना तान कर इन सब पे नाज करते हैं। क्या हम अपनी भाषा तथा घाटी को भी वह मौका दे कि वे भी हमारे लिए फर्क मेहसूस करें। आईए, हम ये संकल्प करें कि जितना हमारे बश में है, उस में हम अपनी भाषा की उन्नति करने की भरपुर कोशिश करें तथा घाटि के इतिहास में अपना नाम सुनहेरा अक्षरों में लिख जाएं।

किताब के बारे में कुछ.....

इस किताब का मुख्य लक्ष्य यह प्रमाण करना है कि पाँगी बोली का भी व्याकरण है। इस किताब को 'इन्डोक्टिव अप्रोच' के तहत बनाया गया है। इस में पहले तो पंगवाड़ी के स्वर तथा वर्णों के बारे में विचार किया गया है। उसके बाद शब्दों के बारे में, और फिर वाक्य खण्डों के बारे में। फिर अन्त में वक्यों के बारे में विवेचना किया गया है। यद्यपि यह पांगी बोली का गहरा अध्ययन नहीं है फिर भी इसको बनाने में ये ध्यान में रखा गया है कि पांगी बोली की मौलिक बिषयों पर आप से परिचित कराया जाए।

इस किताब की कुछ सीमाएं हैं। इस को बनाने में ज्यादातर पंगवाड़ी-किलाड़ी का ही इस्तेमाल किया गया है। यह पाया गया हैं कि पंगवाड़ी-किलाड़ी घाटि के सभी प्रान्त के लोगों के समझ में आती है, जो कि पंगवाड़ी-पुर्थी, पंगवाड़ी-सेचु, तथा पंगवाड़ी-धरवासी में सही नहीं हैं। पंगवाड़ी-किलाड़ी में किताब बनाने में यह भी एक मुख्य कारण है कि यह बोली घाटी के मुख्यालय किलाड़ में बोली जाती हैं। क्यों कि ये अपनी तरह कि पहली पंगवाड़ी किताब हैं, यह सिर्फ लोगों की राय पर ही आधारित हैं। हमने अपनी तरफ से पुरा प्रयास किया है, तथा कुछ बुद्धिजीवियों से भी इस के बारे में वार्तालाप किया है।

हम यह मानते हैं कि इस किताब में आप जरुर कुछ गलत पाएगें, जो कि स्वाभाविक है। हम आपके अभारी होगें अगर आप हमें अपने वहुमुल्य सुझाव एवं राय दें । वह आनेवाले संस्करणों में सहायता कर सकता है। हम यह उम्मीद कर रहें हैं कि यह किताब हमें अपनी मातृभाषा को अधिक करीब से जानने में मदद करेगी तथा पंगवाड़ी सिखनेवालों के लिए भी बहुत कारगर साबित होगी। हमें यह भी आशा है कि इस किताब से उत्साहित होकर, आनेवाले समय में यहां के लोगों के द्वारा अनेक पंगवाड़ी व्याकरण की किताबें तथा अन्य किताबें भी लिखी जाएगी, जिसे से कि भाषा को समृद्धि तथा सन्मान मिलेगा।

पांगी टीम

विषय सूची

प्रस्तावना 3

किताब के बारे में कुछ..... 4

भाषा और व्याकरण 8

पंगवाड़ी भाषा का घराना 8

व्याकरण क्या है? 10

1. वर्ण विचार (Phonology) 11

1.2. वर्ण और उनके भेद 11

1.2.1. ध्यान का विषय 14

1.3. ध्वनिवन्ध (Syllable) 15

1.4. शब्द में ध्वनिवन्ध के बिभाजन (Distribution of syllables in words) 15

1.4.1. एक ध्वनिवन्धयुक्त शब्द 16

1.4.2. दो ध्वनिवन्धयुक्त शब्द 16

.1.4.3 तीन ध्वनिवन्धयुक्त शब्द 16

1.4.4. चार ध्वनिवन्धयुक्त शब्द 16

2. पद विचार (Morphology) 17

2.2. संज्ञा (Noun) 17

2.2.1. संज्ञाओं के भेद (Kinds of Noun) 17

2.2.2. संज्ञाओं में विकार 19

2.3. सर्वनाम (Pronoun) 23

2.3.1. सर्वनाम के भेद (Kinds of Pronoun) 23

2.4. सख्या एवं माप तौल (Numerals and Measurements) 26

2.5. विशेषण (Adjective) 27

2.5.1. विशेषण के भेद (Kinds of Adjective) 28

2.6. क्रिया (Verb) 29

2.6.1. क्रिया पद की सरंचना (Structure of the Verb) 29
2.6.2. काल (Tense) 29
2.6.3. भाव (Aspect) 30
2.6.4. क्रियाओं में करार (Agreement in the Verbs) 33
2.6.5. क्रियाओं के भेद (Types of Verb) 34
2.6.6. क्रिया की रूपसारणी (Verb Paradigm) 36
2.7. क्रिया विशेषण (Adverb) 37
2.7.1. क्रिया विशेषण के भेद (Kinds of Adverbs) 37
2.8. विशेष (Gerundives) 39
2.9. संबंधबोधक (Adpositions/Prepositions) 40
2.10. समुच्चय बोधक (Conjunctions) 40
2.11. विस्ययादिबोधक (Interjections) 41
3. वाक्य विचार (Syntax) 42
3.2. वाक्य कि सरंचना (Clause Constituents) 42
3.2.1. संज्ञा पदवंध तथा संज्ञा पदवंध कि सरंचना (Noun phrase and order of Noun phrase constituents) 43
3.2.2. क्रिया पदवंध तथा क्रिया पदवंध कि सरंचना (Verb phrase and order of verb phrase constituents) 43
3.3. उपवाक्यों के प्रकार (Types of Clauses) 44
3.3.1. कर्म रहित वाक्य 44
3.3.2. कर्म सहित वाक्य 44
3.3.3. द्विकर्मक वाक्य 44
3.4. वाक्यों का भेद /प्रकार (Kinds of Sentences) 45
3.4.1. विधान वाचक 45
3.4.2. आज्ञा वाचक 45
3.4.3. निषेध वाचक/ नकारात्मक 45
3.4.4. प्रश्न वाचक 46

3.4.5. इच्छा वाचक 46
3.4.6. संदेह वाचक 47
3.4.7. शर्त / संकेत वाचक वाक्य 47
3.4.8. विस्मयादि वाचक वाक्य 47
Bibliography 48

भाषा और व्याकरण

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहने के लिए उसे औरों से बाते करना तथा अपने विचारों को प्रकट करना जरुरी होता है। वह जिस माध्यम से इसे करता है उसे हम भाषा कह सकते हैं। वैसे, भाषा एक सामुहिक शब्द है। यह हमें सकेंतीक भाषा, कम्प्युटर कि भाषा, गाणितीक भाषा, तथा मौखिक भाषा आदि का अर्थ समझाती है। पर हम इस किताब में 'भाषा' शब्द का मतलब सिर्फ "मौखिक भाषा" के आधार पर करेंगे।

दुनिया भर में लगभग तीन हजार भाषायें प्रचलित हैं। जिन को, शब्दसमूह तथा व्याकरण कि समानता के आधार पर 18 परिवारों में विभाजित किया गया है। इन में से हमारे देश में अभी तक चार परिवारों की भाषाएं पाई जाती हैं, जो कि आनोखी है। वे हैं 1. भारोपीय परिवार (Indo-European languages) के आर्य भाषा परिवार (Indo-Aryan languages), 2. द्राविड़ भाषा परिवार (Dravidian languages), 3. दक्षिण-पूर्व एशियाई भाषा परिवार (Austro-Asiatic languages) एवं 4. चीनी भाषा परिवार(Tibeto-Burman languages)। हमारे देश में इन परिवारों में से भारोपीय परिवार की भाषाएं सबसे ज्यादा बोली जाती है। जिन में हिन्दी, पंजाबी, कश्मिरी, गुजराती, मराठी, राजस्थानी, बिहारी, बंगाली, उड़िया, डोग्री, असमीज आदि प्रमुख है। यदपि अभी तक भारतीय संविधान में कुल 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है, फिर बि ऐसी अनेक भाषाएं हैं जिन को उपभाषा के तहत रखा गया हैं। कोई भी दो भाषाएं कुछ शब्दों के समानता से एक नहीं होते है। जैसे कि हिन्दी और तमिल भाषा में बहुत सारे शब्द एक जैसे हैं। फिर भी ये दोनो अलग अलग भाषाएं हैं। भाषा को पहचानने के लिए आजकल के भाषावित्त ना कि सिर्फ शब्दों को परखते हैं बल्कि उस भाषा के व्याकरण को देखते हैं जो कि हर भाषा के लिए अलग अलग होती है।

पंगवाड़ी भाषा का घराना

हमारी पंगवाड़ी भाषा का स्थान भारोपीय परिवार के, आर्य भाषा परिवार के, पहाड़ी भाषा समूह के, पश्चिमी पहाड़ी में पड़ता है, जिन में चुराही, भदरवाही, चम्बियाली, गद्दि, लदाखी, भटियाली आदि शामिल है। माना जाता है कि हमारी पंगवाड़ी भाषा 64% मन्डियाली के साथ, 52% कागंड़ी के साथ, 44% चम्बियाली के साथ मिलती है। शब्द समूह में हमारी भाषा 55% हिन्दी से मिलता है।

1 पंगवाड़ी भाषा का वंशावली

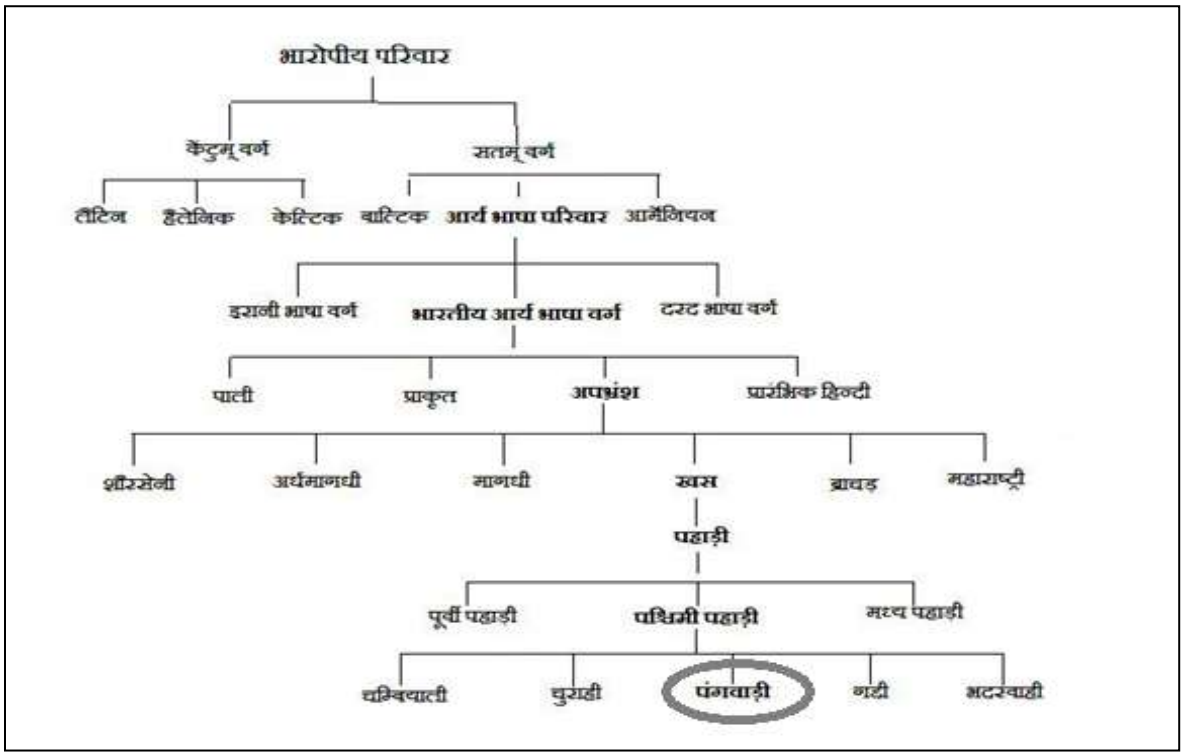

(*उपरोक्त भाषा सारणी सिर्फ पंगवाड़ी भाषा के स्थिति को दर्शाने के लिए है। इस में अनेक भाषाएं सामिल नहीं किए गए।)

2 पश्चिमी पहाड़ी भाषा वर्ग

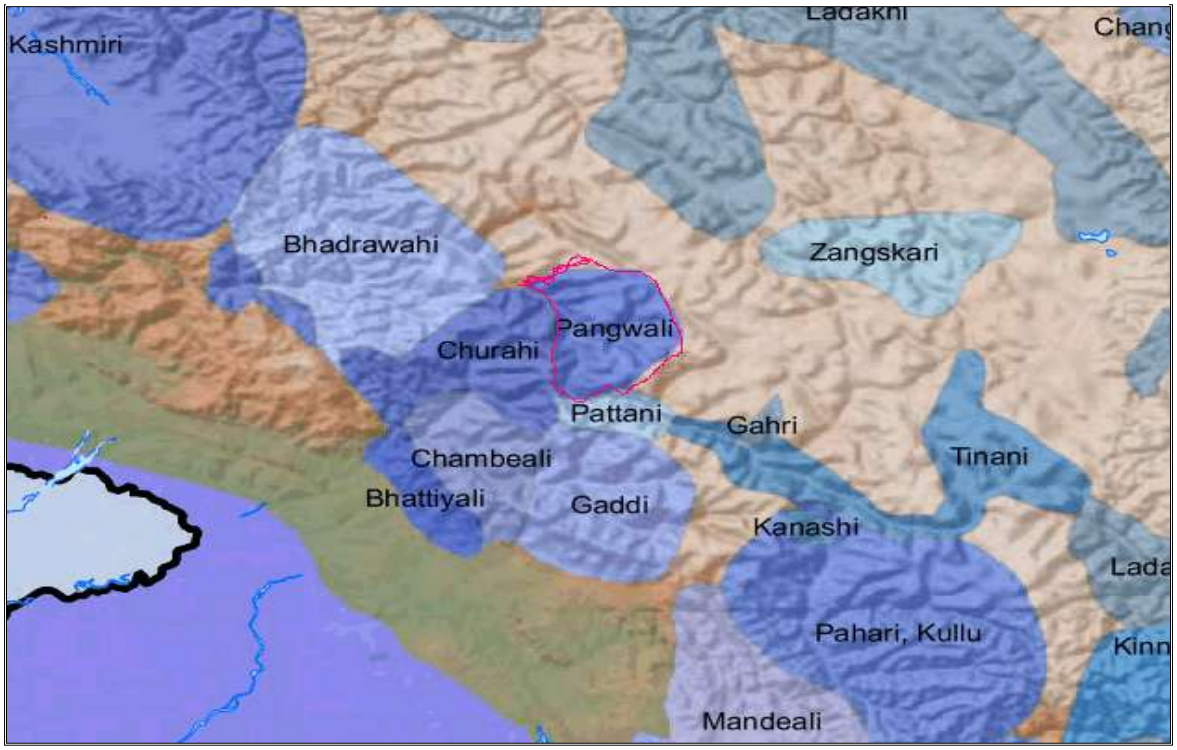

Huffman, Stephen. 2006. Map of the Languages of the Indian Subcontinent. Retrieved on July31, 2008 from http://www.gmi.org/wlms/users/huffman/Huffman-Indian_Subcontinent_Langs-wlms32-100dpi.pdf

व्याकरण क्या है?

हम सब को पता है कि भाषा किस काम में आती है! इस का इस्तेमाल हम वार्तालाप के लिए करते हैं। वार्तालाप तब हो पाती है जब हम एक दूसरे को समझ पाते हैं। कोई भी भाषा समझने लायक होने के लिए एक प्रतिष्ठित व्यवस्था होनी चाहिए, जिस को बोलने वाला एवं सुनने वाला दोनो ही जानते हो। इस को हम साधारणत: व्याकरण कहते हैं। लोग सोचते हैं कि कोई भाषाओं का व्याकरण नहीं होता। पर, धरती पर ऐसी कोई भाषा नहीं जिसका कोई व्याकरण ना हो। अगर व्याकरण ना होता तो उस भाषा में वार्तालाप कभी सम्भव ना हो पाती। हम सिर्फ जानवरों कि तरह अवाज करके अपने भाव को प्रकट करते रहते। प्रो. सुरेंद्र कुमार झा वं डा. अनुपमा सेठ ने अपनी किताब व्याकरण भारती में कहा है "व्याकरण वह शास्त्र है जो किसी भाषा को शुध्द रुप से बोलना, लिखना तथा पढ़ना सिखाता है"। व्यावहारिक दृष्टि से व्याकरण के पांच भाग होते हैं जो कि एक भाषा को अलग पहचान देते हैं। वे हैं १. वर्ण विचार(Phonology), २. शब्द विचार (Etymology), ३.पद विचार (Morphology), ४. वाक्य विचार (Syntax) एवं भाव/अर्थ विचार (Semantics)।

आईए, हम पंगवाड़ी में वर्ण विचार, पद विचार, वं वाक्य विचार के बारे में थोड़ा थोड़ा जानने की कोशिश करें।

1.वर्ण विचार (Phonology)

इस अधाय में हम पेहले लिखन प्रणाली के बारे में विचार करेंगे। फिर हम पंगवाड़ी के स्वरों के बारे में तथा उनको लिखने के बारे में विचार करेंगे।

पुराने जमाने में वार्तालाप तबतक हो पाती थी जबतक दोनो बोलने वाला तथा सुनने वाला एक दुसरे को सुन सकते थे। पर जब बोलने वाला या सुनने वाला उपस्थित न हो, या बोलने तथा सुनने में समय कि बहुत फासला हो, तो वार्तालाप सम्भव हो नहीं पाती थी। ऐसी परिस्थिती में जरुरत थी कुछ ऐसे माध्यम कि जो कि वार्ता को बिना किसी बदलाव तथा बिना किसी गलतफैहमी के, लक्ष्य तक पहुंचा सके। इस जरुरत को पुरा करने के लिए हमारे पुर्वजों ने लिखन प्रणाली का आरंभ किया। शुरु शुरु में तो वे अपने सोच को प्रकट करने के लिए चित्र बनाए। पर जब कुछ भावनाओं को तथा सज्ञाओं को प्रकाश करने में अड़चने आई तो बाद में वे लोगोग्राम से अपने विचार दर्शाये। लोगोग्राम में कुछ चित्र को संकेतों कि तरह इस्तेमाल किया जाता था। पर जैसे मनुष्य कि जरुरते बढ़ती गई, उनकी विचारों को बताने की मुश्किले भी बढ़ती गई। बाद में वे लोगोग्राम को बदल कर अक्षरों कि व्यवहार करने लगे, जहां से हमारी आधुनिक लिखन प्रणाली कि शुरुयात हुई। कहा जाता है कि "मौखिक भाषा (spoken language) समाज की देन है, पर लिखित भाषा (written language) सिर्फ शिक्षित समाज की देन है"। मौखिक भाषा समय के साथ बदलता है पर लिखित भाषा सालों तक वहीं रहती है।

1.2. वर्ण और उनके भेद

मौखिक भाषा ध्वनिओं कि सार्थक मिश्रण है। जब उन ध्वनिओं को किसी चिन्ह या प्रतीक से दर्शाया जाए त उसे 'वर्ण' कहा जाता है। वर्ण दो प्रकार के होते हैं १.स्वर वर्ण २. व्यंजन वर्ण। दुनिया भर के भाषाविद्त इन बर्णों को लिखने के लिए IPA (International Phonetic Association) चिन्हों का इस्तेमाल करते हैं। पर इन वर्णों को दर्शाने के लिए भाषाएं अपनी अपनी प्रकार के संकेतो को व्यवहार करते है। जेसै कि हिन्दी भाषा लिखने के लिए देवनागरी चिन्हों का, अंग्रेजी लिखने के लिए रोमान चिन्हों का, पंजाबी लिखने के लिए गुरुमुखि चिन्हों का इस्तेमाल किया जाता है। जब कोई भाषा किसी निर्धिष्ट चिन्हों को अपने वर्णो दर्शाने के लिए प्रयोग करती है तो उसे हम उस भाषा कि 'लिपि' कहते हैं।

देवनागरी लिपि हिन्दी तथा नेपाली, मराठी, भोजपुरी, हड़ोथी आदि भाषाओं के लिखने में इस्तेमाल किया जाता है। 'देवनागरी' का मतलव "दैवीक सहर की लिपि" है। यह सम्राट अशोक का शिलालेख के ब्राह्मी अक्षरों से उत्पन्न हुआ है जो कि संस्कृत से संबन्ध रखति थी।

पंगवाड़ी भाषा जो अभी तक लिखी नहीं गई है उसे लिखने के लिए देवनागरी लिपि को चुना गया है। ये इसी लिए है कि इस से लोगो को और एक नयी लिपि सिखने तथा याद करने कि जरुरत न पड़ेगी। यह बच्चों को हिन्दी से भी जोड़ने का काम करेगा तथा इस से पंगवाड़ी भाषा सिखने वालो को भी मदद् मिलेगा।

पंगवाड़ी में 17 स्वर वर्ण तथा 31 व्यजन वर्ण पाए जाते हैं। नीचे दिए गये सूची को देखिए।

अ	आ
इ	ई
उ	ऊ
ऍ	ए
ऑ	ओ
ऑ़	**ओ़**
ॲ	**ऑ**
ऐ	औ
औ़	

क	ख	ग	घ	
च	छ	ज	झ	
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
स	ह	ड़		

<u>स्वर वर्ण</u>

अ – अस – हम, अपु - अपना, अल्ला - गीला,

आ – आस - मुहं, भाणि - भाभी,

इ – ति - तीस, चिरिहू – एक किसम का फल, थुरि - एड़ी

ई – ई/ईया - मता, ती - बहुत, पीख – चिमनी/कीप, बीह्ल - धनियां

उ –उछ –रीछ, उश्क – नाराज, टुन - बेहोश, पुठ -उपर, पुन - शिवरात्री

ऊ – कूनि – दूध दुहनेवाला एक पात्र, जचूर – चमर गाय, डढू – मधुमख्खी का घर

ऍ – सॅ - वह, दॅ –विस्मायदि बोधक, चॅरे – देर होना

ए – तें - आपका, केन्थ - एक प्रकार के फल, बधे - मुवारक

ऑ – बॉख - बात, टॉफ - टोपी, ऑठि - वहां

ओ – टोल - परिवार, ढोंस - ढोल, टजोट – प्रजा की बैठक

ऑ़ – ऑ़नॅणी – एक त्योहार, ऑ़खन – जंगली खरगोश, लॉ़नो़ठि – नमक व मसाला बक्स्

ओ़ - ओ़सि – गर्भपात होना, इधो़री – इस जगहू की,

ॲ - ॲलॉ़ण - एक किसम कि पक्षी – ढॅडुड- भेड़

ऑ – ऑटि – रसोई घर, ऑण्ठुड़ - , बॉठुड़ – पथर का एक पात्र

औ़ - चौ़ख – मेंमनों को रखने वाला स्थान, बौ़ठि - बहू, भौ़ – बड़ा भाई

ऐ – कै/कइ – कर के, अदवै/अदवेइ - छोटी सार्ट, घरै/घरेइ – स्थानीय नृत्य।

औ – औखि - मुश्किल, गौड़ा - गाय,

<u>व्यजंन वर्ण</u>

क – कि - क्या, कर - करना, कपल - कब

ख – खी – रगड़ के काट जाना, खारा - अच्छा, खिरण - खीर

ग – गी - घर, गण - मधुमक्खी, गभूर - बच्चे

घ – घी - घी, घीत - गीत, घन्घीत – एक गांव का नाम

च – चा - नहर, चन - जेब, चलण – पजामा/पेंट

छ – छा - लस्सी, छोड़ि - चमड़ा, छतरोड़ि – छतरी।

ज – जां – पता नहीं, जन - मिट्टी, जिआंणु - घुटना, जिभूड़ - जीभ

झ – झा – दर्द, झठ - जल्दी, मुन्झ - चर्बी

ट – टी - आंख, टाई - तीन, टटोरु – सख्त/कठोर

ठ – ठा – बकरों कि संख्या, ठुंग - चंचु, ठनु - ठंडा, ठाठिड़ – मन्दिर का मुख्य चेला

ड – डा – पेड़ कि शाखा, डंग - बरफ, डंगर - जानवर

ढ – ढों - , डढू - मधुगण, ढंग - रीति, ढोसुड़ – छोटा ढोल

ण – पोणि/पाणि - पानी, घण – बड़ा हथौड़ा, मडीण - मारना

त – त – और/ तो, तन्के - उनके , तोस – एक पेड़ का नाम

थ – थोबि – स्थानीय चटाई, थॉथा - थोथा, थमोह् – एक गांव का नाम

द – दॉदि - दादी, दार – लकड़ी का खंभा, बदे - बादल

ध – धाम - प्रीतिभोज, धार – चरागाह, उंचे स्थान, बधेल - बैल,

न – न - नहीं, नाह् - नाला, नश - नाखुन, बनैन - स्वेटर, नौखर – मन्दिर की छत का वीम

प – पीं - , पासर – एक कुल का नाम, पल्लण – बड़ा पत्थर, तपल - तब

फ – फाठ – पर्वत की चोटी, फफ़ – एक प्रकार के मसाले, फिउड़ - फूल, अपफु - खुद

ब – बी- बीस, बथ - रास्ता, बेद – एक प्रकार का पेड़, बुह्न - नीचे

भ – भएड़ – पास में, भरेश – २0 घास के बोझे, भेलुड़ – लकड़ी काटने का एक औजार

म – मठे - धीरे, दम - श्वास, थम – लकड़ी का खंभा

य – यक - एक, य्यारा - प्यारा, व्यार - हवा

र – रो – फलों की संख्या, रेउस – जंगली जानवर, रेजूड़ - रस्सी

ल – ला - पहनना, लात - दरॉती, लोलुड़ - किड़ा, लॉंसुड़ - पतीला

व – वन्टे – छत में लगानेवाले लकड़ी के टुकड़े, शॅवा - शैवाल, व्यार - हवा,

स – सॅ - वह, सुआ - बहुत, सामल - सामने, किस - क्यों

श – शाम -श्लेष्मा, शुई – आनेवाला कल, पशम - ऊन, कीश – जौ या गेहूं के पॉंध का भूसा।

ह – हें - हमारे, हन्ट - चल, दहाड़ - दान्त

ड़ – खड़ – उपर , बडा - बड़ा, पुचोड़ूं – नोचना, चिन्डु मारना (पहाड़ी हिन्दी), दाड़ – दाल

1.2.1. ध्यान का विषय

ऍ और ए – इन दो चिन्हों में 'ऍ' छोटी दीर्घता वाली है तथा 'ए' लंबी दीर्घता वाली है।

ऍ और ऐ – इन दो चिन्हों में 'ऍ' छोटी दिर्घता को तथा 'ऐ' स्वरगुच्छ(ए+इ) को दर्शाती है। इन दोनो में फरक उनके उपर लगे मात्राओं में हैं। एक के उपर 'ए' कि मात्रा थोड़ा टेड़ा है तो दुसरे में सीधा है।

ऑ और ओ – इन में 'ऑ' कि मात्रा में मोड़ी है तथा 'ओ' में यह सीधा है।

ऑ और ऑ़ – यह दो चिन्ह लगभग एक ही है, सिवाय 'ऑ़' के नीचे एक विन्दि लगाया गया है। इसे नुक्ता कहते हैं।

ऑ़ और **ओ़** - इन दो चिन्हों के 'ओ' कि मात्रा में फरक है। एक में वह थोड़ा टेड़ा है तो दुसरे में यह सीधा है। इन दोनो में से 'ऑ़' छोटी दीर्घता वाली है और **'ओ़' लंबी दीर्घता वाली है।**

औ और ऑ – इन दो चिन्हों में मात्राओं कि फरक है। **'औ'** स्वरगुच्छ (ओ+उ) को तथा 'ऑ' एक स्वरवर्ण को दर्शाती है।

औ और **औ़** - ये दोनो चिन्ह एक ही है। पर **'औ़'** के नीचे नुक्ता का प्रयोग किया गया है जो एक स्वरगुच्छ(ए+उ) को दर्शाती है।

पंगवाड़ि भाषा में उपर दिए गए स्वरवर्ण हिन्दी भाषा में नहीं हैं। क्यों कि इन को लिखने के लिए देवनागरी लिपि का इस्तेमाल किया गया है, अधिकांश समय इन नये तथा पुराने वर्णों की पहचानने में दिक्कते आती है।

1.3. ध्वनिवन्ध (Syllable)

ध्वनिओं का मिश्रण जिस को एक ही सांस में बोला जा सकता है, उसे ध्वनिवन्ध (Syllable) कहते हैं। ध्वनिवन्ध ही मिलकर पद या शब्द बनाते हैं। पंगवाड़ी में ध्वनिवन्ध का सूत्र [(C1)V(:)(C2)(C3)] है। इस में (C1, C2, C3) व्यजंन वर्ण के संख्या को, 'V' स्वर वर्ण को तथा (:) स्वर वर्ण के दीर्घता के बारे में सूचना देता है तथा () ऐछिक (optional) दर्शाती है। ध्वनिवन्ध में स्वर वर्ण बाध्यतामूलक होती है।

पंगवाड़ी भाषा में नीचे दिए गए प्रकार के ध्वनिवन्ध पाए जाते है।

1. V

   आ – आओ,

   ई - मां

2. VC

   अस – हम,

   ओठि - वहां

3. VCC

   उंघ – सोना

   उश्ख – नाराज होना

4. CV

   चा – नाली

   टी - आंख

5. CVC

   टिश् – प्यास

   किस् - क्यों

6. CVCC

   दुन्त – दो साल का बकरा/भेड़

   लिश्क – फिसलना

1.4. शब्द में ध्वनिवन्ध के बिभाजन (Distribution of syllables in words)

एक पंगवाड़ी शब्द में एक से चार ध्वनिवन्ध हो सकते हैं। निम्न लिखित उदाहरण को देखे।

1.4.1. एक ध्वनिवन्धयुक्त शब्द

आ – आओ

कशि – बरफ फेकनेवाला

भंग – नशीला पौधा

शुल्ल – एक किस्म का पेड़

1.4.2. दो ध्वनिवन्धयुक्त शब्द

अला – गीला

डंगा – डंगे

अलून्छ – एक प्रकार के खटा फल

लाहड़ – घर कि छत

1.4.3. तीन ध्वनिवन्धयुक्त शब्द

अभेईं – अभी, वर्तमान

लहेर – गुस्सा,

मशोकड़ – सूखा गोबर

शरवाठि – एक खास दिन(जब राक्षस का एक त्योहार होता है।)

कतणियाल – कातने में प्रयोग होने वाला लकड़ी या पत्थर का आधार जिस पर ऊन कातने की लकड़ी रखी जाती है।

निदणिईआलु – छोटी कुदाली

1.4.4. चार ध्वनिवन्धयुक्त शब्द

दन्तियाला – बड़े दान्त वाला आदमी।

शुबागन्दि - जुकारु में सम्बोधन करने बाला शब्द।

पैटियाला – ज्यादा खाने वाला आदमी।

2.पद विचार (Morphology)

व्याकरण के इस भाग में हम पदों के प्रकार और उनके व्यवहार के बारे में सोचेगें। ध्वनिवंध के सार्थक समूंह को शब्द या पद कहते हैं। साधारणत: पदों में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण, विस्मयादिबोधक, समुच्चय बोधक या योजक आदि शामिल हैं। आईए, पंगवाड़ी भाषा में इन के बारे में हम थोड़ा जाने।

2.2. संज्ञा (Noun)

संज्ञा उस शब्द को कहा जाता हैं जो एक संभाषण में कर्ता के रुप में, या किसी क्रिया के कर्म (object) का कार्य करता है। इस में कर्ता-धातु, लिंग, वचन, बाध्यकारी है और कारक ऐच्छिक होता है। संज्ञा में लिंग एवं वचन को स्पष्ट रुप से दर्शाया नहीं जाता है। पंगवाड़ी में निचे दिए गए प्रकार के संज्ञाएं पाई जाती हैं।

2.2.1. संज्ञाओं के भेद (Kinds of Noun)

2.2.1.1. संयुक्त संज्ञा (Compound noun)

जब दो स्वतंत्र संज्ञाएं मिलकर एक नई संज्ञा बनाते हैं तो उसे संयुक्त संज्ञा कहा जाता हैं। पंगवाड़ी में पाई जाने वाली ऐसी कुछ संज्ञाओं के उदाहरण नीचे दीए गए है।

शब्द	**अर्थ**	**पूर्ण अर्थ**
घीए लेंसुड़	घी + पतीला	घी का पतीला
गदाण लात	गाद्दी + दसटी	बड़ी दरात
बाठु शाग	पत्थर क पतीला + सालन/ सब्जी	मांस पकाने का पत्थर का वर्तन।

2.2.1.2. व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper noun)

जब कोई संज्ञा किसी के नाम कि तरफ निर्देश करती हो तो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। नीचे कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

शब्द	**अर्थ**
शीखा	एक लड़की का नाम
सुराल	एक जगह का नाम
सुमारि	गाय का नाम
घुगी	एक पहाड़ का नाम
नाग	एक देवता का नाम

2.1.1.3. जातिवाचक संज्ञा (Common noun)

जिन संज्ञा से किसी निर्धिष्ट जाति/प्रकार/किस्म का ज्ञान हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। पंगवाड़ी के कुछ जातिवाचक संज्ञाओं को नीचे दिया गया।

शब्द	**अर्थ**
उनाउ	भेड़
छागल	बकरा
गोउर	गाय, चूर, जाचूर
मनख	मनुष्य
बुटा	पेड़
टाठ	खरपतवार/ अवांछित घास
नाह्	नाला

2.1.1.4. गण्य संज्ञा (Countable noun)

जिन संज्ञाओं को गिना जा सकता है, उन्हें गण्य संज्ञा कहते हैं। पंगवाड़ी में दो प्रकार की गण्य संज्ञा पाई जाती हैं। पहले प्रकार के संज्ञा हमेशा एकवचन में पाए जाते हैं जिन के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं।

शब्द	**अर्थ**
गौड़ा	गाय
सगालि	लोमड़ी
गी	घर
बोउ	पिता
कुआ	बेटा

दुसरे प्रकार की संज्ञा हमेशा वहुवचन में पाए जाते हैं। उनकी संख्या दिखाने के लिए संख्याओं का सहारा लिया जाता है। कुछ उदाहरण नीचे दिया गया है।

शब्द	**अर्थ**	**शब्द**	**अर्थ**
मेह्णु	आदमी	टाई मेह्णु	तीन आदमी
जिल्हाणु	औरत	पंज जिल्हाणु	पांच औरते
रुपेई	रुपेई	दश रुपेई	दस रुपये
टज	प्रजा	वारह् टज	बाराह् प्रजा

गण्य संज्ञाओं का संख्या दर्शाने के लिए प्रत्यक्ष संख्याओं का प्रयोग किया जाता है तथा विशेषण और क्रिया में उनके मुताबिक प्रतय लगाया जाता है।

2.1.1.5. समूहवाचक संज्ञा (Mass noun)

जिन संज्ञाओं को गिना नहीं जा सकता तथा जो हमेशा समूह में पाए जाते हैं उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहा जाता है। इन के साथ प्रत्यक्ष संख्याओं का प्रयोग नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए नीचे दिए गए सारणी को देखे।

शब्द	अर्थ
डंग	बर्फ
पशम	ऊन
छा	लस्सी
ओसर	एक किसम की चटनी
गिहुं	गेहूँ

2.1.1.6. भाववाचक संज्ञा (Abstract noun)

जिन संज्ञाओं को महसूस् किया जा सकता हैं तथा जिनका परिमाण/ वस्तुत नहीं होता, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। पंगवाड़ी में कुछ उदाहरण नीचे दिया गया है।

शब्द	अर्थ
लेहर	गुस्सा
दाहू	दया
ढुक	भूख
चेता	स्मरण, याददाश
टिश	प्यास
उंघ	निद्रा

2.2.2. संज्ञाओं में विकार

पंगवाड़ी संज्ञाओं में विकार या परिवर्तन इन तीन कारणों से होता है।
१. लिंग, २. वचन, ३. कारक

2.2.2.1. लिंग (Gender)

भाषा के क्षेत्र में जब लिंग कि बात की जाती है तो वह शारीरिक लिंग कि नहीं होती। संज्ञाओं का लिंग विभाजन शरिरीक लिंग से नहीं बल्कि जिस तरह से वे विभिन्न प्रतय लेते हैं उस के आधार से किया जाता हैं। पंगवाड़ी में तीन प्रकार के लिंग पाए जाते हैं। वे हैं –पु लिंग, -स्त्री लिंग, एंव नपुंसक लिंग। जैसे कि पहले ही कहा गया हैं कि पंगवाड़ी संज्ञा में लिंग की पुष्टि में कोई नियमितता नहीं होती, तो किसी संज्ञा का लिंग पता करने के लिए हमें उस संभाषण का क्रिया पद को देखना होता है। क्रिया पदों में देखा गया है कि पु लिंग को –आ

(एक वचन के लिए) स्त्री लिंग को –इ तथा नपुंसक लिंग को –उ मात्रा के उपसर्ग से दर्शाया जाता है। यह देखा गया है कि जब पु लिंग सज्ञा का आकार छोटा हो तो उस पर –उ कि मात्रा होती है।

पंगवाड़ी में सब रिश्तेदारी शब्दों के लिंग का विभाजन होता है। नीचे दिए गए उदाहरणों को देखिए।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
कुआ	बेटा / लड़का	कुई	बेटी / लड़की
दॉदु	दादा	दॉदि	दादी
नॉनु	नाना	नॉनि	नानी
भेउ	बड़ा भाई	देई/ भेंण	बहन
चाचा	चाचा	चाचि	चाची।

सिवाय 'उछ' - 'भालु' अन्य वन्य जीवजन्तु को साधारणत: एक ही लिंग से दर्शाया जाता है, चाहें वह पुरुष हो या स्त्री हो।

शब्द	अर्थ	लिंग
सगालि	लोमड़ि	स्त्री लिंग (असि)
उखन	खरगोश	नंपुंसक लिंग (असु)
ढिकुल	एक छोटा जंगली जानवर	नंपुंसक लिंग (असु)
पीज	जंगली वकरी	स्त्री लिंग (असि)
रेउस	कस्तूरी मृग	नंपुंसक लिंग (असु)
कर्त	जंगली वकरा	पू लिंग (असा)

यह भी पाया गया है कि पंगवाड़ी में गृह पालित जानवरों का लिंग विभाजन शारिरीक लिंग के आधार पर होता हैं बल्कि वन्य जन्तुओं में यह देखा नहीं जाता।

पु लिंग	स्त्री लिंग
कुतर	कुतिर
बकरा	बकिर
बलाहु	बलाहइ

2.2.2.2. वचन (number)

शब्द के जिस रुप से संज्ञा के एक, दो अथवा अधिक संख्या का ज्ञान हो, उसे वचन कहते हैं। पंगवाड़ी संज्ञा में वचन की पुष्टि स्पष्ट रूप से नहीं की जाती। बहुत कम संज्ञा हैं जिनमें वचन प्रत्यक्ष रूप में पाए जाता है। लिंग कि तरह वचन को भी '–आ' कि मात्रा से पु लिंग के एक वचन को और '–ए' कि मात्रा से पु लिंग के बहु वचन को दर्शाया जाता हैं। स्त्री लिंग के संज्ञा को चाहें एक वचन में हो या बहु वचन में, दोनो को ही '–इ' कि मात्रा से दर्शाया जाता है। यह देखा गया है कि स्त्री लिंग तथा नंपुंसक लिंग के संज्ञाएं वहु वचन में

कोई प्रतय नहीं लेते। पर उनकी वहु वचन का प्रभाव पुरक क्रिया (असा...) में देखी जाती है। नीचे दिए गये सारणी में यह साफ देखी जा सकती है।

एक वचन में	अर्थ	वहु वचन में	अर्थ
यक बकिर असि।	एक बकरी है।	सत बकीर असि।	सात बकरी हैं।
यक ढेडुड़ असु।	एक भेड़ है।	दश ढेडुड़ असे।	दस भेड़ें हैं।
यक सेव बुटा असा।	एक सेव का पेड़ है।	पंजि सेव बुटे असे	पचीस सेव के पेड़ हैं।
में यक गौड़ा असा	मेरी एक गाय है।	में पंज गौड़े असे	मेरी पांच गाये हैं।

2.2.2.3. कारक (case)

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से उसका दूसरे शब्दों से संबंध जाना जाए उसे कारक कहते हैं।

पंगवाड़ी में पांच प्रकार के कारक हैं। वे संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के बाद आते हैं। अत: इन्हें परसर्ग भी कहते हैं।

2.2.2.3.1. करण कारक (Instrumental)

संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के साधन का बोध होता है उसे 'करण' कारक कहते हैं। पगंवाड़ि में इस को दर्शाने के लिए 'बइ' 'जुए' या 'जुओई', 'बलि' आदि का इस्तेमाल किया जाता हैं।

शब्द	पंगवाड़ी में	हिन्दी में
बइ	मेंई प्याज चिआखु बइ कटु।	मैंने प्याज चाकु से काटा।
जुए	रामु लात जुए घास काटता।	रामु दरॉती से घास काटता है।
बलि	तेनी कदॉलि बलि यक खपुर बणा।	उसने कदॉलि से एक गढह् खोदा।

2.2.2.3.2. सम्प्रदान कारक (Dative)

जिसे कुछ दिया जाए या जिसके लिए कोई क्रिया की जाए उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। पगंवालि में सम्प्रदान कारक को दर्शाने के लिए 'जे' का इस्तेमाल किया जाता है। नीचे दिए गए उदाहरणों को देखे।

शब्द	पंगवाड़ी में	हिन्दी में
जे	अस राहुल **जे** जुएलि पुछुण जे गोओ थिए।	हम राहुल के लिए वीवी पूछने गये थे।
	रौठि पकुंण **जे** आटा आह्ल!	रोटी पकाने के लिए आटा लाओ!
	शुभम् पढुं **जे** सकूल गो असा।	शुभम् पढ़ने के लिए स्कूल गया है।
	इ झोड़ा तस देण **जे** दुतो असा।	यह थली उसे देने के लिए दिया है।

2.2.2.3.3. अपादान कारक (Ablative)

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के अलगाव की सूचना मिलती है, उसे अपादान कारक कहते हैं। पगंवालि इस कारक को प्रकाश करने के लिए 'केआं', 'पुटा/बुटा' एवं 'ए' कि मात्रा कि उपयोग करता है। जैसे कि निन्मों लिखित वाक्यों में पाए जाते हैं।

शब्द	**पंगवाड़ी में**	**हिन्दी में**
केआं	चन **केआं** रुपेई झाड़ि गे।	जेब से रुपये गिर गए।
पुटा/बुटा	अउं **बुटे** पुटा झाड़ा।	मैं पेड़ से गिरा।
'ए'	से गी**हा** नश गइ।	वह घर से भाग गई।

2.2.2.3.4. संबंध कारक (Genitive)

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध क्रिया को छोड़कर किसी दूसरी संज्ञा के साथ सूचित होता है, उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं। पंगवाड़ी में यह देखा गया है कि कोई भी व्यक्तिवाचक संज्ञा (proper names) में संबंध कारक 'ए' या उसकी मात्रा नहीं लगती।

शब्द	**पंगवाड़ी में**	**हिन्दी में**
	अबु कुतर	अबु का कुत्ता
	अबु टीर	अबु की आंखे
	सालु बोउ	सालु का वाप
	मिनु नक	मिनु की नाक

व्यक्तिवाचक संज्ञा के सिवाय बाकि संज्ञाओं में 'ए' कि मात्रा या सन्धि परिवर्तन (Morphophonemic changes) होता है। नीचे दिए गए उदाहरणों को देखिए।

शब्द	**पंगवाड़ी में**	**हिन्दी में**
	दिल**े** बोक	दिल कि बात
	प्यार**े** इम्तहान/अमध्यान	प्यार का इम्तहान
	कुतर**े** पुछिड़	कुत्ता का पुंछ
	मगर**े** टिका	मथे कि बिन्दी
	गीह**े** दुआ	घर का दरवाजा
	टिवीए स्वुइच।	टिवी का स्विच
	बकर**े** गुरदे	बकरा कि दिल

रिश्तेदारी संज्ञाओं में देखे गए सन्धि परिवर्तन को नीचे देखिए।(अधिक जानकारी कि जरुरत है।)

शब्द	**पंगवाड़ी में**	**हिन्दी में**
ईया	ईया + ए = ई**ये**	मां की
कोया	कोया + ए = को**ये**	वेटे की

शब्द जिस में 'ए' कि मात्रा नहीं लगता। (अधिक जानकारी कि जरुरत है।)

शब्द	पंगवाड़ी में	हिन्दी में
जुएलि	जुएलि + ए = जुएलि	पत्नी की
नॉनु	नॉनु + ए = नॉनु	नाना की
दॉदि	दॉदि + ए = दॉदि	दादी की
कुई	कुई + ए = कुई	वेटी की

2.2.2.3.5. सम्बोधन कारक (Vocative)

संज्ञा के जिस रूप से किसी को पुकारने का बोध होता है, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। पंगवाड़ी में निन्म लिखित सम्बोधन कारक मिलते हैं।

शब्द	पंगवाड़ी में	हिन्दी में
ओहिल्या	**ओहिल्या**, इसे शुणि दे!	अरे, (पति पत्नी के बीच में) इसकी सुनो!
भिलिए	**भिलिए,** तउ की पता सा?	अरे, (दस्तों के बीच में) तुझको क्या पता है?
कोया	**कोया**, धिक चुपचप बिश्!	वेटा, थोड़ा चुपचाप बैठ।
कुईए	**कुईए**! ठीक असि न तु?	लड़की, क्या तुम ठीक हो?
बारा	**बारा**, तु इए जे न आ!	यार, तू इधर मत आना!
बा	मठे गा **बा**!	आराम से जाओ!
बे	हां **बे,** मेईं बि शुणु!	हाँ, मैंने भी सुन लिया।

2.3. सर्वनाम (Pronoun)

जो शब्द पुनरुक्ति (दुहराना) दोष को हटाने के लिए किसी संज्ञा के बदले प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।

2.3.1. सर्वनाम के भेद (Kinds of Pronoun)

2.3.1.1. पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal pronoun)

जिन सर्वनामों से बोलने वाले, सुनने वाले, अथवा जिसके विषय में कुछ कहा जा रहा हो, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। ये तीन प्रकार के हैं।

2.3.1.1.1. उत्तम पुरुष (First person)

जिस सर्वनाम का प्रयोग बोलने तथा लिखने वाला अपने लिए करता है, उसे उत्तम पुरुष कहते हैं। पंगवाड़ी में इस का दो प्रकार हैं। अउं – जो कि साधारणत: इस्तेमाल किया जाता

है, और मेंई – जो कि असंपुर्ण अतीत को दर्शाने के लिए सिर्फ अकर्मक क्रिया (intransitive verb) के साथ प्रयोग किया जाता है।

2.3.1.1.2. मध्यम पुरुष (Second person)

जिसका प्रयोग सुननेवाले अथवा पढ़ने वाले के लिए होता है। तु – साधारणत: इस्तेमाल किया जाता है। तू- का इस्तेमाल सिर्फ संम्मान देने में किया जाता है।

2.3.1.1.3. अन्य पुरुष (Third person)

जिसका प्रयोग उसके लिए होता है, जिसके विषय में कुछ कहा या लिखा जा रहा हो,। से- अन्य पुरूष को दर्शाने के लिए प्रयोग किया जाता है।

पंगवाड़ी सर्वनाम सिर्फ वचन के लिए विकार लेते हैं पर लिंग के लिए ये अविकारी होते हैं।

पुरुष	**एकवचन**	**अर्थ**	**वहुवचन**	**अर्थ**
उत्तम पुरुष	अउं, मेईं	मैं	अस	हम
मध्यम पुरुष	तू, तुस	तुम, आप	तुस	तुम लोग, आप लोग
अन्य पुरुष	से	वह	से	वे

2.3.1.2. निजवाचक सर्वनाम (Reflexive pronoun)

जिस से नीजत्व या अपनत्व का बोध होता है, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। पंगवाड़ी में 'अपफ' तथा 'अपु' शब्दों को निजवाचक सर्वनाम की तरह व्यवहार किया जाता है। नीचे दिए गए वाक्यों को देखिए।

	पंगवाड़ी में	**हिन्दी में**
	छने, **अपु** मोवाइल मेन्ध दे	कृपया, अपना मोवाइल मुझे दें।
	अउं **अपफ** घेन्ता।	मैं खुद जाउंगा।
	तु **अपफ** करिंण दे !	तुम खुद करो!

2.3.1.3. अधिकृत सर्वनाम (Possessive Pronouns)

पंगवाड़ी अधिकृत सर्वनाम में लिंग का कोई प्रभाव नहीं होता। उनकी सारणी नीचे दी गई है।

	एकवचन	**अर्थ**	**वहुवचन**	**अर्थ**
प्रथम पुरुष	में	मेरा	हें	हमारा
मध्यम पुरुष	तें	तुम्हारा	तूं	आपका
अन्य पुरुष	एकवचन	अर्थ	वहुवचन	अर्थ
निकट	इसे	इनका	इन्के	इनके
ध्यम दुर	असे	उसका	अन्के	उसके
दूर	ओसे	उनका	तन्के	उन्हीके

2.3.1.4. निश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative pronoun)

जो सर्वनाम किसी वस्तु का निश्चय करते हैं उन्हें "निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

स्थानवाचक सर्वनाम (Locative pronoun)

पास		**मध्यम दूर**		**दूर**	
इठ	यहां	ओठि	वहां	तठि	वक्ता और श्रोता से दूर
इस् कनाह्	इस तरफ	उस् कनाह्	उस तरफ	ता	वहां
इनिंबाई	इस रास्ते	ओनंबाई	उस रास्ते		

2.3.1.5. अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinite pronoun)

जिस सर्वनाम से किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

कुछ	कुछ जगरा ईं असा से	थोड़ा पागल जैसा है, वह।
कोई	तउ कोई भेएण लगो असा	आपको कोई बुला रहा है।

परिमाणवाचक सर्वनाम

सोब	सोब मेह्णु इएर अए।	सभी आदमी यहां आए।
सम्हाई	सम्हाई छड़	पूरा डालो!
सुआ	तठि सुआ कठोड़ असे।	वहां बहुत लकड़ी है।
धिक	धिक कड़ि छड़!	थोड़ा कड़ि डालो!

2.3.1.6. सबंधंवाचक सर्वनाम (Relative pronoun)

जिस सर्वनाम द्वारा वाक्य में किसी दूसरे सर्वनाम से सबंधं स्थापित होता है उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। पंगवाड़ी में **'जैस', 'जीं'** आदि का इस्तेमाल किया जाता है।

2.3.1.7. प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative pronoun)

जिस सर्वनाम से प्रश्न का बोध हो, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम करते हैं। 'कि' - क्या, 'कीं' - कैसे, 'किस' - क्यों, 'को'/'कुर्हे' - कहां, 'कपल' - कब, 'कउं' – कोन, आदि को पंगवाड़ी प्रश्नवाचक सर्वनाम कि तरह इस्तेमाल करती है।

शब्द	पंगवाड़ी में	हिन्दी में
कि	इ **कि** भो?	यह क्या है?
कीं	तु **कीं** झाड़ा गडि पुटा?	तुम गाड़ी से कैसे गिरे?
किस	अशोक **किस** ओ थिआ?	अशोक क्यों आया था?
को/कुरहे	मनु, **कुरहे** घेण लगो सा?	मनु, कहां जा रहा है?
कपल	मन्त्रीजी **कपल** पुजते?	मन्त्रीजी कब पहंचेगें?
कउं	**कउं** भिन्थ बे तु, बोलुणे बाड़ा?	तु कोन होता है, बोलने वाला?

2.4. सख्या एवं माप तौल (Numerals and Measurements)

पंगवाड़ी संख्याएं हिन्दी से बहुत मिलते जुलते हैं। पुराने जमाने में सिर्फ बीस (20) तक कि गिनती होती थी। पर जैसे बिस से ज्यादा गिनने की जरुरत हुई त उन्हे हिन्दी से ग्रहण किया गया। नीचे कुछ संख्याओं का नमुना दिआ गया है।

Numeral	Number	Numeral	Number
यक	1	बी	20
दुई	2	पंजि	25
टाई	3	तीह्	30
चेउर	4	चाढ़ि	40
पांच	5	पंझा	50
		एकुंझा	51
छेअ	6	पचुन्झा	55
सत	7	शठ	60
आठ	8	पेंठ	65
नोउ	9	बाठ	62
दश	10	निढुनुए	99

पंगवाड़ी में माप तौल करने के लिए पदार्थ के हिसाब से विभिन्न माध्यमों का प्रयोग किया जाता है। जैसे कि आटा, गिहु, दाड़ आदि अनाज को माप ने के लिए 'वाठु' और 'मन्ने' (आटा

से बना एक प्रकार का दोसा) को गिनने के लिए 'लुटुड़' और 'रउन' का, जमीन को माप ने के लिए 'हथ' और 'हल' कि, थरो आदि को गिनने के लिए संग, संगिस् आदि का, घास को माप ने के लिए 'भेरोठ' और 'भरेस' आदि के, दारु को मापने के लिए 'शिशा' का और भेड़ बकरिओं के लिए 'ठा' का प्रयोग किया जाता है। नीचे दिए गये उदाहरणों को देखे।

शब्द	**पंगवाड़ी में**
बठि	केतु **बठि** गिहुं बोओ असे?
हल	तन्के नोउ **हल** जिम असी।
संघ	मोउ यक **संघ** थरो दिए।
भेरोठ	तेन चोउर **भेरोठ** घास डिले।
सिस	से व्याहू जे पचुंझा **सिस** अराख रखो असा।

मन्ने के लिए:

पंगवाड़ी में	**हिन्दी में**
यक लुटुड़	चार मन्ने
यक रउन	दस लुटुड़ / 40 मन्ने

थरो के लिए:

पंगवाड़ी में	**हिन्दी में**
यक संघ	चार थरो
यक शंगेश	20 संघ / 80 थरो

गिहुं/अनाज के लिए:

पंगवाड़ी में	**हिन्दी में**
यक बाठि	लगभग दो किलो
यक पेड़ा	20 बाठि / 40 किलो

जमीन के लिए:*

पंगवाड़ी में	**हिन्दी में**
एक हथ	यक हथ / लगभग,18 inch.
एक हल	लगभग 3 बीघे
एक बीघा	एक बीघा

(मकान बनाने के लिए जगह नापनी हो तो मीटर या फुट की जगह हथ का प्रयोग होता है या कोहनी से अगुंली तक हाथ की लंबाई 18" या 19" होती है। जिस खेत में 40 किलो या 20 वाठु या रउन बीज लगे, उस क्षेत्र को हल कहते है।)

* अधिक जानकरी चाहिए।

2.5. विशेषण (Adjective)

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है, उसे विशेषण कहते हैं। विशेषण अपने विशेष्य का क्षेत्र संकुचित कर देता है, जैसे 'घोड़ा लाओ' कहने पर लाने वाला किसी भी रंग

का घोड़ा ले आ सकता है किन्तु जब यह कहा जाए कि "नीला घोड़ा लाओ" तो नीला ही लाना पड़ेगा।

2.5.1. विशेषण के भेद (Kinds of Adjective)

2.5.1.1. गुणवाचक विशेषण (Qualitative adjective)

जिस विशेषण से संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, दशा, आकार, स्थान, समय, रंग आदि का बोध हो, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं। नीचे दिए गये कुछ उदाहरणों को देखें।

शब्द	पंगवाड़ी में	हिन्दी में
बढ़िआ	से बढ़िआ मेह्णु असा	वह अच्छा आदमी है।
अब्बुल	मन्जु अब्बुल झिणे डबो असे।	मन्जु ने सुन्दर कपड़े पहने हैं।
कुस्तुरी	ए कुस्तरी सूट किस खरिदो सि?	यह गन्दी सूट क्यों खरिदा है।
मोटा	से मोटा कुआ बोता।	वह बड़ा लड़का बोलता है।
मठड़ी	मठड़ी कुई तसे भो।	छोटी लड़की उसकी है।
लम्मु	तसे लम्मु झशुड़ हेर !	उसके लंवे वाल देखो!
छोटि	तें छोटि कमिर कोठि असि।	आपकी छोटी कमीज कहां है?
शुखे	शुके बुटे जे पोणि दिए!	सुखे पेड़ों में पानी दो!
अल्ले	अल्ले झिणे जुए न बिश, ठनु भून्तु।	गिले कपड़ो में न बैठो, ठन्ड लग जाएगी।
गरका	तें झोड़ा सुआ गरका असा।	आपका थैला बहुत भारी है।
पोलु	ए त पोलु सु	यह (थैला) तो हलका है।
टटोरि	टटोरीं बोल अण्ह बा।	सक्त बोल लाना!
नरम	नरम कम्मण असु न?	क्या नरम कम्बल है?
थुलि	थुलि रेजुड़ दिए!	मोटी रस्सी दो!
निकी	निकी धागा असा न?	पतला धागा है क्या?
टुठा	तेन टुठा झोड़ा नीआं।	उसने काला थैला लिया।
हच्छा	हच्छा पशम इए कर!	वह सफेद ऊन इधर लाओ।
चौड़ि/चौड़ा	बगोटु केआं खड़ बथ चौड़ी असी।	बगोटु से आगे रस्ता चौड़ा है।
संकिरि	संकिरि बथ पुठ मठे घेण एन्तु।	पतले रास्ते में धीरे जाना होता है।

2.5.1.2. संख्यावाचक विशेषण (Adjective of Numbers)

जिस से संज्ञा अथवा सर्वनाम की संख्या का बोध हो उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

2.5.1.2.1. क्रमवाचक (तीसरा ,दूसरा ,पहला)-

पंगवाड़ी भाषा में क्रमवाचक विशेषण, हिन्दी कि तरह ही है। जैसे की पेहला, दुसरा, तीसरा, चौथा, पांजवा, छटा, सातुंवा आठंवा, नौवा, दशुंवा आदि।

2.5.1.2.2. आव्ऋत्तिवाचक

पंगवाड़ी में आवृत्तिवाचक संख्या को दर्शाने के लिए 'लिंग' प्रतय का प्रयोग किया जाता है। जैसे की नीचे सारणी में देखा जा सकता है।

पंगवाड़ी में	हिन्दी में
यक लिंग	एक बार
दुई लिंग	दो बार
चोउर लिंग	चार बार

2.6. क्रिया (Verb)

2.6.1. क्रिया पद की सरंचना (Structure of the Verb)

पंगवाड़ी भाषा कि क्रिया पद एक बाध्यकारी धातु, भाव, तथा ऐच्छिक सहायक क्रिया एवं बाध्यकारी करार चिन्ह को मिलाकर बनती है।

क्रिया > धातु + भाव + (सहायक क्रिया) + लिंग एवं वचन चिन्ह।

VERB > V + ASP + (BE) + GND & NUM. पंगवाड़ी क्रिया में सहायक क्रिया काल को दर्शाता है। लिंग एवं वचन के प्रतय एक होने के कारण इन्हे हमेशा साथ में पाए जाते हैं।

2.6.2. काल (Tense)

काल वह व्याकरणिक सूत्र है जो किसी कार्य को एक समय सूत्र में बांधता है, विषेश कर तब से जब से उस क्रिया का उल्लेख किया गया हो। विभिन्न भाषाऐं इस को अलग-अलग ढंग से विभाजित करते हैं। पंगवाड़ी काल को दो भाग से विभाजित करती है जैसे १. भूत काल (past tense), २. भूत रहित काल (non-past tense) कहा जा सकता है।

2.6.2.1. भूत काल (Past tense)

संभाषण के पेहले होने वाले क्रिया के काल को भूत काल कहते हैं। पंगवाड़ी में भूत काल को थिआ, थी, थिए, थिउ आदि से दर्शाया जाता है।

2.6.2.2. भूत रहित काल) Non-past tense)

संभाषण के समय या बाद में होने वाले क्रिया के काल को वर्तमान काल कहते हैं। जो क्रिया संभाषण के समय हो रही होती है, उस क्रिया के काल को वर्तमान काल कहते हैं। भूतरहित काल को असा, असि, असु, असे, -न्ता आदि द्वारा दर्शाया जाता है।

2.6.3. भाव (Aspect)

किसी क्रिया की अंदरूनी समय सीमा तथा संगठन को जो प्रकट करते हैं उन्हें भाव कहते हैं। वास्तव में भाव, एक क्रिया कब शुरु होता है, कब खत्म होता है, तथा क्रिया कैसे किया जाता हैं उसके बारे में प्रकट करते हैं।

पंगवाड़ी भाषा के क्रिया में छे: प्रकार के भाव पाए जाते हैं जैसे कि

2.6.3.1. आसन्न भाव

जब कोई क्रिया या कार्य शुरु होने वाला होता है उसे सूचित करने के लिए क्रिया के रूप को आसन्न भाव कहते हैं। यह भाव, क्रिया के न शुरुआत कि और न खत्म होने को सूचित करता है, बल्कि यह भाव कार्य शुरु होने से पहले कि परिस्थिति के बारे में दर्शाता है। पंगवाड़ी क्रिया में इस भाव को प्रकट करने के लिए 'बाड़ु'; 'बाड़ा'; या 'बाड़ि' आदि को कर्ता या कर्म का लिंग के आधार पर इस्तेमाल किया जाता है। नीचे दिए गए वाक्यों को देखिए।

पंगवाड़ी में	**हिन्दी में**
गभूर सकुल केआं एणे बाड़े असे।	बच्चे स्कूल से आनेवाले हैं।
जीं से मरणे बाड़ि असि।	जैसे वह मरने वाली है।
गी पूरु भूणे बाड़ु असु।	घर पूरा होने वाला है।

2.6.3.2. प्रारंभिक भाव

क्रिया के जिस रुप से या प्रतय से उसका शुरु होने की सुचना मिलती है उसे प्रारंभिक भाव कहते हैं। पंगवाड़ी भाषा में क्रिया के इस भाव को दर्शाने के लिए 'लगा'; 'लगि'; या 'लगु' आदि का इस्तेमाल किया जाता है। निन्म लिखित उदाहरण को देखिए।

पंगवाड़ी में	**हिन्दी में**
से डंग बिच तोपुण लगि।	वह वर्फ में ढुडने लगी।
से बांण लगा।	वह हल चलाने लगा।
तउं से गह्रिंड़ लगु।	फिर वह गढ़ा होने लगा।

2.6.3.3. प्रगतिशील भाव

क्रिया के इस रुप से उसकी निरन्तरता के बारे में पता चलता है। यह भाव क्रिया/कार्य के मध्य भाग को दर्शाता है। क्रिया के इस रुप से क्रिया कि शुरुआत या समाप्ति के बारे में कुछ पता नहीं लगता। पंगवाड़ी भाषा में क्रिया के इस भाव को 'लगो' + 'पूरक क्रिया' द्वारा दर्शाया जाता है।

पंगवाड़ी में	**हिन्दी में**
अउं कड़ि बणा लगो असा।	मैं कड़ि बना रहा हुं।
शीला खेलण लगो असि	शीला खेल रही है।
तपल ढॉव मुसुल सजुरु घीउ खाण लगो थिआ।	तब ढॉव मुसुल नया घी खा रहा था।
से खुरै लाण लगो थी।	वह झाड़ू मार रही थी।

2.6.3.4. परिपूर्ण भाव

क्रिया के जिस रुप/प्रतय से उसकी समाप्ति के बारे में पता चलता है उसे परिपूर्ण भाव कहते हैं। क्रिया के इस भाव को दर्शाने के लिए पंगवाड़ी भाषा क्रिया के मुल रुप को इस्तेमाल करता है। साधारणत: इस भाव में काल दर्शाया नहीं जाता। जैसे कि नीचे दिए गए वाक्यों में मिलते हैं।

पंगवाड़ी में	**हिन्दी में**
कुड अन्तर से दह्लुण हुशी गोउ।	गुफा के अन्दर वह मशाल बुझ गई।
गौड़ा मरि गा।	गाय मर गई।
तेन तसे टी किढ़े।	उसने उसकी आंख निकाली।
यक रोज जेठा भाई गा बां जे।	एक दिन बड़ा भाई हल चलाने गया।

2.6.3.5. पूर्णकालिक भाव

क्रिया के जिस रूप से उसकी पूर्णता/समाप्ति को एक निर्दिष्ट काल के साथ सूचित किया जाता है, उसे पूर्णकालिक भाव कहते हैं। यह दो प्रकार के होते हैं।

2.6.3.5.1. वर्तमान पूर्णकालिक भाव

क्रिया के पूर्णता जब वर्तमान काल में होता है, तो उसे दर्शाने के लिए वर्तमान पूर्णकालिक भाव का इस्तेमाल किया जाता है। पंगवाड़ी भाषा इस भाव को प्रकट करने के लिए क्रिया के साथ परिपूर्ण भाव के प्रतय 'ओ' के साथ वर्तमान काल जोड़ता है।

पंगवाड़ी में	हिन्दी में
मेईं कुकर निओ सा	मैंने कुकर लिया है।
बहार डंग शिओ/शिणो असा।	बाहार वरफ गिरी है।
चुरी नशी गो सी।	(एक किसम का) गाय चली गई है।

2.6.3.5.2. भूत पूर्णकालिक भाव

क्रिया की समाप्ति जब भूत काल में हो तो उसे दर्शाने के लिए भूत पूर्णकालिक भाव का प्रयोग किया जाता है। इस भाव को प्रकट करने के लिए पंगवाड़ी भाषा परिपूर्ण भाव प्रतय के साथ भूत काल जोड़ता है।

पंगवाड़ी में	हिन्दी में
से उंघो थी।	वह सोयी थी।
रामु सुआ पिओ थिउ।	रामु ने बहुत पिया था।
मनु गी धिकबइ रोठि खो थी।	घर में मनु थोड़ा ही खाना खाया था।

2.6.3.6. अभ्यस्त भाव

जो क्रिया प्रतिदिन होता हो उसे दर्शाने के लिए अभ्यस्त भाव का इस्तेमाल किया जाता है। पंगवाड़ी में इस भाव को दर्शाने के लिए –तथ, -तेथ, -तिथ तथा –न्त, -न्ते, -न्ति, -न्तु आदि का प्रयोग करती है।

पंगवाड़ी में	हिन्दी में
शालु रोज दुई गलास दुध पीन्ती।	शालु रोज दो ग्लास दूध पीती है।
अउं रोज दफतर घेन्ता।	मैं रोज दफतर जाता हुं।
से दुआ उघाड़तेथ।	वे दरवाजा खोलते थे।
से रोज भियागे दौड़ताथ।	वह रोज सुबह् दौड़ता था।
प्रीतु दाड़ बणांतिथ।	प्रीतु दाल बनाती थी।
दाई साल मिना घास काटतिथ।	तीन साल मिना घास काटती थी।
से रोज के बोती।	वह रोज बोलती।

2.6.4. क्रियाओं में करार (Agreement in the Verbs)

जब क्रिया, कर्ता के लिंग तथा वचन के तहत अपना रुप बदले या उन्हें दर्शाने के लिए कोई प्रतय ग्रहण करे त उसे हम क्रियाओं के करार कह सकते हैं। अंग्रेजी क्रियाओं में करार नहीं होती। इसलिए तो चाहें "लड़का जा रहा है या लड़की जा रही है" को क्रिया में बिना किसी बदलाव "The boy is going. The girl is going." कहते हैं। पर हिन्दी तथा पंगवाड़ी के क्रियाओं में करार पाए जाते हैं। पंगवाड़ी में यह करार कर्ता तथा कर्म के साथ पाया जाता है। परिपूर्ण भाव में, कर्म के आधार पर तथा अन्य भाव में यह कर्ता के आधार पर क्रिया अपना रूप बदलता है। नीचे दिए गए वाक्यों को देखिए।

	पंगवाड़ी में	**हिन्दी में**
1	मिनु, मुन्ने दे कढ़ाह् दिता।	मिनु, मुन्ना को हल्वा दिआ।
2	मिनु, मुन्ने दे कड़ि दिति।	मिनु, मुन्ना को कड़ि दी।
3	मिनु, मुन्ने दे कढ़ाह् देन्ति।	मिनु, मुन्ना को हल्वा देगी।
4	मिनु, मुन्ने दे कड़ि देन्ति।	मिनु, मुन्ना को कड़ि देगी।

वाक्य 1. और 2. परिपूर्ण भाव में हैं तथा इसमें कर्ता 'मिनु' स्त्री लिंग में हैं गौण कर्म (indirect object) 'मुन्ना' पुलिंग में है। पर इन दोनों वाक्यों में सिर्फ कर्म बदलता है। जैसे कि वाक्य 1. में कर्म 'कढ़ाह्' पुलिंग में है और वाक्य 2. में कर्म 'कड़ि' स्त्री लिंग में है। तो, क्रिया 'दे' कर्म का लिंग के आधार पर बदलता है।

वाक्य 3. और 4. में देखा जाए तो यह मिलता है कि क्रिया का रूप कर्ता के आधार पर बदला है। इन दोनो वाक्यों में कर्म का कोई असर नहीं पड़ी हैं क्यों कि यह दो वाक्य अभ्यस्त भाव में हैं।

2.6.5. क्रियाओं के भेद (Types of Verb)

2.6.5.1. सहायक/पूरक क्रियाएं (Auxiliary/Complementary verbs)

पंगवाड़ी भाषा में 'स' 'थ' एवं 'भो' पुरक क्रियाओं में पाए जाते हैं। इनमें से 'स' वर्तमान काल को तथा 'थ' भूत काल को दर्शाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। 'भो' को अस्तित्वता के लिए प्रयोग किया जाता है।

पंगवाड़ी में	**हिन्दी में**
में नाउ आशा शर्मा असु।	मेरा नाम आशा शर्मा है।
अउं गी थिआ।	मैं घर में था।
तिलमिल पोणि धारोस असु।	तिलमिल पानी धरवास में है।
तसे नॉनि बड़ि खरि थी।	उसकी नानी बड़ी अच्छी थी।
रमेश कउं भो?	रमेश कोन है?
से में शौउर भो।	वह मेरा ससुर हैं।

2.6.5.2. संयुक्त क्रियाएं (Compound verbs)

जब दो क्रियाएं, एक संज्ञा और एक क्रिया, या विशेषण और एक क्रिया मिलके एक नयी क्रिया बनाते हैं तो उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं। इन का तीन भेद है।

<u>क्रिया से क्रिया मिलके</u>

जब 'गा' दुसरे क्रिया से मिलता है तो उस क्रिया कि परिपूर्ण भाव को दर्शाता है।

झड़ि गा	गिर गया
मरी गा	मर गया
नशी गा	भाग गया
खड़ी गा	खड़ा हो गया
डरीं गा	डर गया
गुदीर गा	मर गया

'दे' 'ला' और 'कर' आदि को मुख्य क्रिया से मिला कर उस क्रिया कि आदेशात्मक ढंग को दर्शाते हैं। उदाहरणों के लिए नीचे देखें।

क्रिया से क्रिया मिलके

पंगवाड़ी में	**हिन्दी में**
बिशिण दे	रहने दो
खाइण दे	खाओ
पीइण दे	पीओ
दौड़ीं दे	दौड़ो
उघिंण दे	सो जाओ
जुकिंण दे	मारो

संज्ञा से क्रिया मिलके

पंगवाड़ी में	हिन्दी में
अराम कर	आराम करो
बोक कर	बात करो
कम कर	काम करो
झिणे ला	कपड़े पेहनो
खुरै ला	झाड़ु लगाओ
घीत ला	गीत गाओ
बूटे ला	पेड़ लगाओ

दुसरे शब्दों के साथ मिलके

पंगवाड़ी में	हिन्दी में
साफ कर	साफ करो
बुह्न कर	नीचे करो
पता कर	प़ता करो
खड़ भो	खड़ा हो जाओ
चुप बिश	चुप बैठो

2.6.6. क्रिया की रूपसारणी (Verb Paradigm)

पंगवाड़ी क्रिया पद कैसे विकार लेते हैं या कैसे अपना रूप बदलते हैं उसकी एक सुची नीचे दी गई है। इस रूपतालिका के लिए 'नेण' – 'लेना' शब्द को लिया गया है। पंगवाड़ी क्रिया 'पुरूष' के लिए विकार नहीं लेते बल्कि वह 'लिंग' तथा 'वचन' के लिए विकार लेते हैं। ध्यान से देखिए कि पूर्णकारी एवं संपूर्णकारी भाव में क्रिया पद 'ने' से बदल के 'नि' का रूप लेता है।

	पुलिंग		**नपुंसकलिंग**		**स्त्रीलिंग**	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एक वचन	बहुवचन
प्रारंभिक	नेण लगा	नेण लगे	नेण लगु	नेण लगे	नेण लगी	नेण लगी
प्रगतिक	नेण लगो सा	नेण लगो से	नेण लगो सु	नेण लगो से	नेण लगो सी	नेण लगो सी
पूर्णकारी	निआ	निए	निउ	निए	नी	नी
भूत पूर्णकारी	निओ थिआ	निओ थिए	निओ थिउ	निओ थिए	निओ थी	निओ थी
भूत-रहित पूर्णकारी	निओ सा	निओ से	निओ सु	निओ से	निओ सी	निओ सी
संपूर्णकारी	नी छाड़ा	नी छाड़े	नी छाड़ु	नी छाड़े	नी छाड़ि	नी छाड़ि
भूत व्यावहारिक	नेन्ताथ	नेन्तेथ	नेन्तुथ	नेन्तेथ	नेन्तीथ	नेन्तीथ
भूत रहित व्यावहारिक	नेन्ता	नेन्ते	नेन्तु	नेन्ते	नेन्ती	नेन्ती
भूत आसन्न	नेण वाड़ा थिआ	नेण वाड़ा थिए	नेण वाड़ा थिउ	नेण वाड़ा थिए	नेण वाड़ा थी	नेण वाड़ा थी
भूत रहित आसन्न	नेण वाड़ा असा	नेण वाड़ा असे	नेण वाड़ा असु	नेण वाड़ा असे	नेण वाड़ि असी	नेण वाड़ि असी
नकारात्मक*	निओरा	निओरे	निओरु	निओरे	निओरि	निओरि
प्रेरणार्थक						
विशेष	नेण					

(*दिए गए क्रियारूप किसी भी वाक्य में सिर्फ नकारात्मक पद 'नेई' के साथ मिलता है। जैसे की, पीओरु नेई, उंघोरा नेई, खोओरु नेई आदि।)

2.7. क्रिया विशेषण (Adverb)

जिस शब्द से क्रिया कि विशेषता प्रकट होती है, उसे क्रिया विशेषण कहते है। क्रिया विशेषण अविकारी होते हैं, अर्थात इनके रुप लिंग, वचन, पुरुष, और वाक्य के कारण कभी नहीं बदलते।

2.7.1. क्रिया विशेषण के भेद (Kinds of Adverbs)

2.7.1.1. रीतिवाचक क्रिया विशेषण

जिस शब्द से क्रिया या कार्य होने के रीति तथा ढंग का बोध हो उसे रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। पंगवाड़ी में पाए गए कुछ रीतिवाचक क्रिया विशेषण इस प्रकार है।

शब्द	**अर्थ**
बले	सावधानी से
झठ	जल्दी
मठे	धीरे
चुपचप	चुपके से
जोर जे	जोर से/ वल पुर्वक
उमलि	विपरीत में
सुमलि	ठीक से

पंगवाड़ी में	हिन्दी में
बले बोल, कोइ शुणता!	धीरे बोलो, कोई सुनेगा।
मठे गा बा!	धिरे से जाओ!
बस घेण लगो सि, झठ हन्ठ!	बस जा रहा है, जल्दी चलो!
गभूर आज चुपचप खेलण लगो असे।	बच्चे आज चुपचाप खेल रहें हैं।
तेन्हि जोर जेई लियारी दिति।	उन्होने जोर से अवाज दी।

2.7.1.2. गुणवाचक क्रिया विशेषण

जिस शब्द से कार्य के गुणवत्ता का बोध हो उसे गुणवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। पंगवाड़ी भाषा में निचे दिए गए गुण वाचक क्रिया विशेषण पाए जाते हैं।

शब्द	अर्थ
सुसुर	ठीक से
ढिला	ढिला
कश कई	कस के

पंगवाड़ी में	हिन्दी में
लेंसुड़ सुसुर साफ कर!	पतीला को ठीक से साफ करो!
में खपुड़ ढिला भोई गे।	मेरे जुराब ढिले हो गये।
से चुरी कश कई बन्धता।	वह गाय को कस कर बान्धता है।

2.7.1.3. कालवाचक क्रिया विशेषण

जिस शब्द से क्रिया के समय तथा अवधि का बोध हो उसे 'कालवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। पंगवाड़ी में पाए गए कुछ कालवाचक क्रिया विशेषण इस प्रकार हैं।

शब्द	अर्थ
अभेईं	अभी
पता	बाद में
सबेले	आगे ही, जल्दी
होता	अभी अभी
भियागे	सुबह
ब्यादि	शाम
पथवारि	प्रभात, अमृत वेला, चारवजे
अगिर,	पेहले
रोज	हर दिन
दिन भइ	दिन भर
कदि-कदि,	कभी कभी
घड़ि घड़ि	बार बार
फी	फिर

पंगवाड़ी में	हिन्दी में
अभेईं अउं न खान्ता।	मैं अभी नहीं खाउंगा।
से रुपेई पता देन्ता।	वह रुपये बाद में देगा।
रामु पथवारि घेई घेन्ता।	रामु सबेरे ही जाएगा।
से भियागे चह्म पूजि घेन्ता।	वह सुबह चम्बा पहंच जाएगा।
मन्जु ब्यादि सुआ पढ़ति।	मन्जु रातको ज्यादा पढ़ती है।
से सबेले उंघति बी।	वह ज्लदी सोती भी है।
अगिर तुलसीराम जी इठ ओ थिए।	पहले तुलसीराम जी यहां आए थे।
से कदि कदि बजार एन्ति।	वह कभी कभी बाजार आती है।
से कुआ घड़ि घड़ि इए जे किस हेरता?	वह लड़का बार बार इधार क्यों देख रहा है?
तु फी एई गा न!	तुम फिर से आ गये क्या!

2.8. विशेष (Gerundives)

क्रिया के जिस रुप से (सामान्य रुप पढ़ना, करना, चलना, टहलना आदि से) काल का बोध नहीं होता, उन्हे क्रियार्थक संज्ञाएँ कहा जाता हैं। पंगवाड़ी में विशेष का रुप क्रिया के रुप से बहुत मिलता है। देखा गया है कि क्रिया को विशेष बनाने के लिए उस क्रिया के अन्त में –उण लगाया जाता है। ये भी कहा जा सकता है कि क्रिया के शेष स्वर वर्ण थोड़ा लम्मा किया जाता है तथा अन्त में नासिक वर्ण/ चद्रविन्दु दिया जाता है। नीचे लिखे उदाहरण पर ध्यान दीजिए।

पढ़ - पढ़ूं
उंघ - उंघूं
खा - खां
लिख - लिखूं

2.9. संबंधबोधक (Adpositions/Prepositions)

वाक्य में जो अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के साथ दुसरे शब्दों का संबंध प्रकट करते हैं उन्हे संबंधबोधक कहा जाता है। पंगवाड़ी में पाए जाने वाले कुछ खास संबंधबोधक नीचे दिए गए हैं।

शब्द	**अर्थ**
पुठ	उपर
वेहुई	उपर
बुह्न	नीचे
पड्डे	नीचे
बहार	बाहार
अन्तर	अन्दर
अगिर	आगे
पतुं	पीछे
समल / सामण्हि	सामने
भएड़	वगल में, पास

पंगवाड़ी में	**हिन्दी में**
मन्जा पुठ न बिश, कुआ उंघो असा!	खटिआ में मट बैठो, बेटा सोया है!
अउं वेहुई गो ओ थिआ।	में उपर गया था।
बुह्न घेई आ धिक!	थोड़ा नीचे जाके आओ।
से गी अन्तर थिआ।	वह घर के अन्दर था।
कुणसि पड्डे असु, हेरिण दे!	कुर्सी का नीचे है, देख!
तसे समल/सामण्हि ई बोलु बे त मेईं।	उसके सामने ही बोला तो मैं।
अन्कु पतुं अविनाश बिशो असा।	अन्कु के पीछे अविनाश बैठा है।
तन्के सकुले अगिर देहर असा।	उनके स्कूल के आगे मन्दिर है।
तसे भएड़ न बिशिन्तु, सुआ मुश्क एण लगो असी।	उसके पास बैठा नहीं जाता, बहुत बदबू आ रही है।

2.10.समुच्चय बोधक (Conjunctions)

शब्द	**अर्थ**
त	और
बि	भी
न	ना
न त	नहीं तो
पर	पर (हिन्दी से लिया हुआ)
या	या (हिन्दी से लिया हुआ)

पंगवाड़ी में	हिन्दी में
रामु त शामु मडिण लगो असे।	रामु और शामु झगड़ रहे हैं।
अउं बि बजार एन्ता।	मैं भी बाजार आउंगा।
न गीहे न घाते।	ना घर के रहे ना घराट के।
में रुपेई दिए न त यक पेटि सिएउ दिए!	मेरे रुपेई दो नहीं त एक पेटी सेव दो!
रुमा चादुर खरिदतिथ, पर तस केई रुपेई नेइ।	रुमा चादुर खरिदी होती पर उसके पास पैसे नहीं।
तु उघिण दे या पढ़िण दे! इयाणि न बिश!	तुम सो जाओ या पढ़ो! वेकार ना बैठो!

2.11.विस्ययादिबोधक (Interjections)

विभिन्न आवेगों को दर्शाने के लिए जो स्वतंत्र शब्द प्रयोग किया जाता है, उसे विस्ययादिबोधक कहते है। पंगवाड़ी में पाए गए कुछ विस्ययादिबोधक इस प्रकार हैं।

शब्द	अर्थ
में बोउआ!	वाप रे ! (हैरानी प्रकट करने के लिए)
में ईया!	उई मा ! (हैरानी प्रकट करने के लिए)
ओ	ओह ! (दर्द/कष्ट प्रकट करने के लिए)
आच्छा	अच्छ! (अश्चर्य भाव प्रकट करने के लिए)
छी	छी: ! (घृणा भाव प्रकट करने के लिए)
ह्: आ	हाय ! (दु:ख प्रकट करने के लिए।)
गयीस	अविश्वास प्रकट करने के लिए (विश्वास दिलवाने के अभिप्राय से)

3. वाक्य विचार (Syntax)

शुरु से हम देख रहें हैं कि कैसे ध्वनिओं का मिश्रण ध्वनिवन्ध का रूप लेता है और ध्वनिवन्ध कैसे शब्द बनता है। अब हम देखेंगे कि कैसे शब्द मिल कर वाक्य का रूप लेते है। वाक्य सिर्फ शब्दों का समूह नहीं होते। यह सार्थक शब्दों का सार्थक समूह है जो एक वक्ता के भावों को सही प्रकट करता हो। इसे किसी भी भाषा की न्युनतम इकाई भी कहते हैं, क्यों कि जब हम वार्तलाप करते हैं तो हम वाक्यों का प्रयोग करते हैं ना कि शब्दों का। किसी शब्द का सही मतलब समझने के लिए हमें उस वाक्य को देखना होता है। यानि की शब्दों का परिपूर्णता वाक्यों में होता है।

यह देखा गया है कि जब हम एक नयी भाषा सीखते हैं तब हम ज्यादातर शब्दों को सिखने में ध्यान देते हैं। पर हम वाक्यों को कैसे बनाते हैं और उनकी सरंचना कैसी होती हैं उसके बारे में ध्यान नहीं देते। इस लिए जब हमे बात करना होता है तो हम एक एक शब्द बोलते हैं। हर भाषा की वाक्य सरंचना अलग-अलग होती है। अत: यह जरुरी है कि हम शब्दों के साथ उस भाषा की वाक्य की सरंचना कैसी है तथा उनका भेद कैसे हैं, उसके बारे में जाने।

3.2. वाक्य कि सरंचना (Clause Constituents)

वाक्य की सरंचना एक ऐसी विषय है जो एक भाषा को अलग पहचान देती है। वाक्य में सार्थक शब्द अपने मन मुताबिक नहीं रहते। बल्कि वक्ता अपनी वार्ता को सही दिशा देने के लिए शब्दों का प्रबन्धन करता है। जैसे कि “उसको मैंने बोला।”, “मैंने उसको बोला।”, “बोला, मैं उसको।” इन वाक्यों में यदपि शब्द वहीं है फिर भी उनके प्रबन्धन से हर एक वाक्य का अलग अलग उदेश्य है। इन वाक्यों में हम देख पाते हैं कि वाक्य में कब संज्ञा आगे आती है त कब कर्म आगे आता है या कभी कभी क्रिया भी आगे आती है। किसी भाषा के वाक्य का गठन जानने के लिए हमें एक सरल वाक्य लेते हैं जहां एक कर्ता, एक क्रिया तथा एक कर्म हो। फिर हम उनके क्रम को देखते हैं। देखा गया है कि अंग्रेजी भाषा में पहले कर्ता, उसके बाद क्रिया फिर शेष में कर्म होता है। जैसे कि “I am eating an apple.” तो अंग्रेजी में वाक्य का गठन साधारणत: subject – verb – object (SVO) होता है। पर जब हम पंगवाड़ी तथा हिन्दी भाषा को देखेंगे तो पता चलता है कि पंगवाड़ी में पहले कर्ता, उसके बाद कर्म और शेष में क्रिया होती है। जैसे कि “अउं सेव खाण लगो असा”। इस वाक्य में ‘अउं’ कर्ता है, ‘सेव’ कर्म, तथा ‘खाण लगो असा’ क्रिया है। अत: यह कहा जा सकता है कि पंगवाड़ी भाषा में वाक्य का प्रबन्धन कर्ता (subject) – कर्म (object) – क्रिया (verb) SOV है।

किसी भी वाक्य में शब्द अपने अपने घराने के साथ मिल कर रहते हैं। यानि की जो शब्द समूह वाक्य में कर्ता का काम करते हैं वह एक इकाई बनाते हैं, और जो शब्द मिल कर क्रिया का काम करते हैं वह भी एक इकाई बनाते हैं। उन इकाई / शब्द समुह को हम पदवन्ध कहते

हैं। पदवन्ध पांच प्रकार के होते हैं जैसे कि संज्ञा पदवन्ध, क्रिया पदवन्ध, सर्वनाम पदवन्ध, विशेषण पदवन्ध, तथा क्रिया विशेषण पदवंध। अभी के लिए हम सिर्फ संज्ञा पदवंध और क्रिया पदवंध के बारे में विचार करेंगे।

3.2.1. संज्ञा पदवंध तथा संज्ञा पदवंध कि सरंचना (Noun phrase and order of Noun phrase constituents)

जिस पदवंध का मुख्य संज्ञा होती है, उसे संज्ञा पदबंध कहते हैं। इस में निश्चयवाचक सर्वनाम, अधिकृत सर्वनाम, संख्या, विशेषण तथा संज्ञा आदि शामिल होते हैं। पंगवाड़ी संज्ञा पदवंध एक अनिर्वाय संज्ञा तथा ऐछिक विशेषण, निश्चयवाचक सर्वनाम, अधिकृत सर्वनाम , संख्या तथा सम्बन्धवाचक वाक्यांश के संयोजन से बनती है। संज्ञा पदवंध में इन सभी सदस्य का क्रम: पहले निश्चयवाचक सर्वनाम, अधिकृत सर्वनाम, फिर संख्या, उसके बाद विशेषण, फिर संज्ञा या सम्बन्धवाचक वाक्यांश होता है। पंगवाड़ी संज्ञा पदवंध का सूत्र होगा

संज्ञा पदवंध > (निश्चयवाचक सर्वनाम)(अधिकृत सर्वनाम)(संख्या)(विशेषण) + संज्ञा/ (सम्बन्धवाचक वाक्यांश)

Noun Phrase (NP) > (DEM) (POSS)(NUM) (ADJ) + N/ (Rel. Cl)

संज्ञा पदवंध में इन सदस्यों का क्रम परिवर्तित हो सकता है, पर यह देखा गया है कि निश्चयवाचक सर्वनाम हमेशा पहले आता है। निन्मलिखित उदाहरणों को देखिए।

से कुआ।
से मोटा कुआ।
से दुई मोटि कुई मोऑसि भिन्ति।
तसे दुई मठि मठि कुई सुआ लेअर देन्ति।
ओ कुई जेन जूड़ा बणाईकई कुणे पुठ बिशो सि, में भिन्थ।
से दुई लॉमि लॉमि कुई जेस झसुड़ निकि निकि असि अबुल घीत लान्ति।

3.2.2. क्रिया पदवंध तथा क्रिया पदवंध कि सरंचना (Verb phrase and order of verb phrase constituents)

जब अनेक पद मिलकर क्रिया पद का कार्य करें तो उसे क्रिया पदबंध कहते हैं। पंगवाड़ी क्रिया पदवंध क्रिया, क्रिया विशेषण, तथा संबंधवाचक सर्वनाम कि संयजन से बनती है। पंगवाड़ी क्रिया पदवंध में क्रिया सबसे शेष में आती है। उस से पहले क्रिया विशेषण और संबंधवाचक सर्वनाम (prepositional phrase) होते हैं। क्रिया पदवंध कि सूत्र :

क्रिया पदवंध > (क्रिया विशेषण)(संबंधवाचक सर्वनाम)+क्रिया।

Verb phrase (VP) > (ADV)(PREP.PHRA)+V.

क्रिया पदवंध के सदस्य अपना क्रम बदल सकते हैं। संयुक्त क्रिया में भी मुख्य क्रिया हमेशा शेष में आती है तथा यह सब उपसर्ग लेती है।

नीचे दिए गए वाक्यों को देखिए।

प्रिया रौठि खेई।

प्रिया झॉठ झॉठ रौठि खेई।

प्रिया चमचा बई झॉठ झॉठ रौठि खेई।

3.3. उपवाक्यों के प्रकार (Types of Clauses)

3.3.1. कर्म रहित वाक्य

कर्म रहित वाक्य वह है जिस में एक ही हिस्सेदार हो अथवा जिस वाक्य में कर्म रहित क्रिया हो। ऐसी वाक्य में क्रिया का फल कर्ता के उपर ही पड़ता है तथा कर्म नहीं होता। इन वाक्य के वाच्य परिवर्तन कभी किया नहीं जा सकता। पंगवाड़ी के इन वाक्यों का सूत्र :

कर्म रहित वाक्य > संज्ञा पदवंध + क्रिया पदवंध (Intransitive clause > NP + VP)

नीचे दिए गए उदाहरणों को देखे।

से उंघ गा।

तउं अस गी जे एँ।

अनु अपु बोउ केआं दौड़ि।

3.3.2. कर्म सहित वाक्य

कर्म सहित वाक्य वह है जिस में दो हिस्सेदार होते हैं (कर्ता तथा कर्म), या जिस वाक्य में सकर्मक क्रिया हो। ऐसी वाक्यों में क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है। इन वाक्यों का वाच्य परिवर्तन किया जा सकता है। पंगवाड़ी कर्म सहित वाक्य का सुत्र :

कर्म सहित वाक्य > संज्ञा पदवंध + कर्म + क्रिया पदवंध (Transitive clause > NP + OBJ + VP)।

नीचे दिए गए वाक्यों को देखे।

तेन दह्लुण टातु।

मेईं रौठि खेई।

पता से दुआ उघाड़ु।

3.3.3. द्विकर्मक वाक्य

द्विकर्मक वाक्य वह है, जिस में तीन हिस्सेदार होते हैं (कर्ता, प्रधान कर्म, गौण कर्म) जिनमें से एक हिस्सेदार साधारणत: निर्जीव होता है। साधारणत: पंगवाड़ी द्विकर्मक वाक्य का सूत्र :

द्विकर्मक वाक्य > संज्ञा पदवंध + गौण कर्म + प्रधान कर्म + क्रिया पदवंध।

(Ditransitive clause > NP + OBJ 2 + OBJ 1 + VP) देखा गया है कि वाक्य के उदेश्य के अनुसार कर्म का क्रम बदल सकता है। उदाहरणों के लिए नीचे देखें।

तेन कुतुरे दे यक मांसु टुकुड़ दितु।

तेन यक मांसु टुकुड़ कुतुरेदे दितु।

3.4. वाक्यों का भेद /प्रकार (Kinds of Sentences)

अर्थ की दृष्टि से वाक्य के आठ भेद होते हैं।

3.4.1. विधान वाचक

जिन वाक्यों में क्रिया के करने या होने का सामान्य बौध हो उसे विधान वाचक वाक्य कहते हैं।

राजा एन्ता त सोब चुप घेई घेन्ते।

जे खरा सा से हमेशा अब्बुल सोचता।

“बोउआ! मेईं परमेश्वरे त तें अगर पाप किओ सा।

ई सोब हेर कइ मुशरेउ कशी बिश्तु।

इस बुछ सगालि मुहं केआं पोणि एण लगो थी।

3.4.2. आज्ञा वाचक

जिन वाक्यों से आज्ञा या अनुमति का बोध हो, उसे आज्ञा वाचक वाक्य कहते हैं।

में मगिरि जूं हेरिण दे !

तस पठ कई इए घिन अए !

तु शाग बणांण दे !

दौड़ि गा, बस नशोणे बाड़ि असि !

तु अब व्याह् कइ सकता।

3.4.3. निषेध वाचक/ नकारात्मक

जिन वाक्यों में कार्य न होने का भाव व्यक्त है, उसे निषेध वाचक कहते हैं।

से मेउ नाओ।

से ना मेउ।

तउ न लगता पता।

गभूर गी न भुन्ते।

तस नाओ सुनील नेई।

3.4.4. प्रश्न वाचक

जिन वाक्यों में प्रश्न पूछने का बोध हो, या जिन वाक्यों में कुछ जानकारी पाने की अपेक्षा हो उसे प्रश्न वाचक वाक्य कह सकते हैं। भाषाएं इन वाक्यों को दो भाग से बांट देती है। पहला प्रश्न वाचक वाक्यों में सिर्फ 'हां' या 'ना' जवाब कि उम्मीद होति है। इन वाक्यों को 'अबरुद्ध प्रश्न' भी कहा जाता है और इसमें जानकारी संकीर्ण होता है। दूसरे प्रश्न वाचक वाक्यों में विस्तृत जानकारी की उम्मीद होती है। इन वाक्यों में प्रश्न वाचक सर्वनामों कि इस्तेमाल किया जाता है।

3.4.4.1. अबरुद्ध प्रश्न वाचक (Yes/no questions)

विशेष स्वर शैली से भी ज्यादा पंगवाड़ी भाषा अबरुद्ध प्रश्न पुछने के लिए 'न' की प्रयोग करती है। यह हमेशा वाक्य के शेष में आती है। कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं।

बोउ गीहे असा न ?
तु भियागे पुजा न ?
रौठि खेईगे न बे तुस् ?
से बि ओ थी ना ?

3.4.4.2. विषयवस्तु प्रश्न (Content questions)

विषयवस्तु प्रश्न वाक्यों में पूछे गए प्रश्नों को "खुला प्रश्न" भी कहते है क्यों कि इन प्रश्नों का जवाब देने के लिए बहुत सारे विकल्प होते हैं। इन वाक्यों में प्रश्नवाचक सर्वनामों कि प्रयोग किया जाता है। पंगवाड़ी भाषा भी उनेक प्रश्नवाचक सर्वनामों प्रयोग करती है। वे सर्वनाम साधारणत: कर्ता के निकट पाए जाते हैं। पर वे वाक्य में अपना जगह बदल सकते हैं। नीचे दिए गए उदाहरणों को देखिए।

तु कोठि थिआ ?
तु को जे गो सा ?
मद्राह् कीं बणान्ते?
से कउं भीन्थ ?

3.4.5. इच्छा वाचक

जिन वाक्यों से वक्ता की इच्छा, शुभकामना और आर्शीवाद का बोध हो, उसे इच्छा वाचक वाक्य कहते हैं।

काश, अउं बि गो भुन्ताथ तउ जुए।
वावु बणो लौता तउ।
तउ अब्बुल जुएलि मेओ लौति।
जुग-जुग जीए कोया।

3.4.6. संदेह वाचक

जिन वाक्यों में कार्य के होने में संदेह या संभावना प्रकट हो, उसे संदेह वाचक वाक्य कहते हैं।

3.4.7. शर्त / संकेत वाचक वाक्य

जिन वाक्यों में एक बात का होना दूसरी बात पर निर्भर हो, उसे शर्त वाचक वाक्य कहते हैं।

अगर तु बजार घेअल त तउ मासूं मेई घेन्तु।
अगर डंग शिअल त मोउ ठनु भुन्तु।
अगर अउं अराख पिआल त मोउं लाग चढ़ घेन्ति।
से अगर बिस्रिएल त तस याद दिलाई छड़ बा।
तु भुन्ताथ त पुराणि पुराणि कथा लन्ताथ।
तउ जे भुन्ताथ त की कताथ ?
तें हतोउ न भोल त तनि फियुड़ तठि की लान्ता?
डंग बि सिअल न तउं बि अउं घेन्ता चौकि।

3.4.8. विस्मयादि वाचक वाक्य

जिन वाक्यों में विस्मय, हर्ष, घृणा आदि के भाव व्यक्त हों, उसे विस्मयादि वाचक वाक्य कहते हैं।

में बोउआ! इ की लगो सि बोलुण तू ?
मारि गई बे, ईया !
अ आ! की बोलुं तउ अब। तु समझताई नओ।

Bibliography

Books

- प्रो. सुरेंन्द्र कुमार झा, डा. अनुपमा सेठ, व्याकरण भारती, H.G. Publication, New Delhi, 2004.
- प्रो. सुरेंन्द्र कुमार झा, वैशाली अरोड़ा, दीप हिन्दी व्याकरण और रचना (आठवीं कक्षा के लिए), H.G. Publication, New Delhi, 2003.
- डॉ.कर्म सिंह, मिद्धु संस्कृत व्याकरण, (कक्षा 6 के लिए), H.G. Publication, New Delhi, 2003

Unpublished material

- Binaya, Dhanunajay, Pangwali Phonology writeup, 2010.
- Binaya, Dhanunjay, Pangwali Grammar writeup, 2010.